अभिव्यक्ति

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

सितंबर 2020, बारहवां अंक

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अभिव्यक्ति

संरक्षक

विवेक खनेजा

संपादक

डॉ. आरती नूर

सुनीता अरोड़ा

सह संपादक

डॉ. चन्द्र मोहन

ओम प्रकाश शर्मा

कवर डिजाइन

रंजन कुमार

विशेष सहयोग

नवीन चन्द्र

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं,
उनसे सी-डैक, नोएडा और संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अनुसंधान भवन, सी-56/1, सैक्टर-62

नोएडा- 201309 (उ.प्र.)

फोन: 0120-3063311-13, फैक्स: 0120-3063317

विषय सूची

क्रम सं.	रचना	लेखक/संकलनकर्ता	पृष्ठ सं.
तकनीकी लेख			
1	नेटवर्क सूचना प्रणाली (एन.आई.एस.)	हिमानी गर्ग	11
2	साइबर जागरूकताः मिलकर बनाएं एक बेहतर कल	डॉ. नेहा बाजपेई	15
3	वैक्सीन का महत्व	अमिय मोहंती	18
4	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसः मानव संसाधन विभाग के लिए सुनहरा भविष्य	आशु कृष्णा	22
5	क्या है पेरेन्टल कन्ट्रोल	अमिय मोहंती	27
6	DBMS क्या है?	गौरव	30
गैर-तकनीकी लेख			
7	हिन्दी भाषा की महत्ता और हमारा संकल्प	देशना सचान	32
8	आवाजाही के साधन व पर्यावरण	चन्द्र मोहन	33
9	सौभाग्य योजनाः विशेषताएं, लाभ और चुनौतियां	ओम प्रकाश शर्मा	36
10	कोरोना वायरस	नितेश	39
11	जाति प्रथा और राजनीति	ऋतेश द्विवेदी	41
12	लॉकडाउन	गौरव	43
13	टेंशन दूर करने के तरीके	अमिय मोहंती	45
कविता, कहानी			
14	माँ	अनिल कुमार	47
15	पुरस्कार या दंड	देशना सचान	48
16	लंबी रात	अनिल कुमार	51
17	एक अप्रदर्शित नाटक	संकल्प गर्ग	52
18	कोरोना को हराना है	ओम प्रकाश शर्मा	54
19	जिंदगी	राजेन्द्र सिंह	55
20	कवि नहीं हूँ मैं	गौरव	58
21	जीवन एक संघर्ष	रामबिलास चौधरी	59

22	एक बार फिर	सक्षम पाण्डेय	61
23	आप बीती	ओम प्रकाश शर्मा	62
24	जिंदगी एक सवाल	संकल्प गर्ग	63
25	पहचान	नवीन चन्द्र	64
26	लॉकडाउन की मधुशाला	अनिल कुमार	65
27	वृद्ध अवस्था - शोषण	संकल्प गर्ग	66
28	हम कर्मशील हैं	देशना सचान	68
29	हरियाली	गौरव	69
30	जिंदगी	ख्याति बलियान	70
31	मां तेरा धन्यवाद	नीति मेहरा	71
32	सच्ची मित्रता	राजेन्द्र सिंह	72
33	भूख हाय भूख	विद्यासागर	74
34	26 जनवरी, 2020	भुबन दास	76
35	गृहस्थान	गौरव	78
36	ऐ ज़िंदगी	नीति मेहरा	79
यात्रा वृतांत			
37	यात्रा बद्रीनाथ धाम की	देशना सचान	80
श्रद्धांजलि			
38	प्रणब मुख़र्जी	सुनीता अरोड़ा	82
39	ऋषि कपूर	ओम प्रकाश शर्मा	84
राजभाषा कॉर्नर			
40	सी-डैक, नोएडा में हिन्दी पखवाड़ा-2019 का सफल आयोजन : एक रिपोर्ट	ओम प्रकाश शर्मा	85

- - -

संदेश

हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ संघ सरकार एवं अनेक राज्यों की राजभाषा भी है। लोकतंत्र शासन पद्धति में सरकार का यह प्रयास होता है कि शासन का कामकाज जनसाधारण की भाषा में किया जाए ताकि जनता, सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी हासिल करके उनका लाभ उठा सके। हमारे संविधान की धारा 351 के अनुसार संघ की राजभाषा के प्रचार-प्रसार का दायित्व संघ सरकार का है, परन्तु सरकारी कर्मचारी होने के नाते हमारा भी यह उत्तरदायित्व है कि हम अपना दैनिक कार्यालयी कामकाज हिन्दी में करके इसके प्रचार प्रसार में अपना सक्रिय योगदान दें। इसके अलावा यह भी आवश्यक है कि हम अपने दैनिक जीवन में इसका अधिक से अधिक प्रयोग करें। सी-डैक, नोएडा केन्द्र इस दिशा में निरंतर प्रयासरत है। कर्मचारियों को मौलिक लेखन के लिए प्रोत्साहित करने के लिए गृहपत्रिका "अभिव्यक्ति" का वार्षिक आधार पर नियमित प्रकाशन करके एक मंच प्रदान किया गया है।

इस केन्द्र की गृहपत्रिका "अभिव्यक्ति" का 12वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से हमारे केन्द्र के कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता बढ़ाने में अवश्य मदद मिलेगी और वे अपने दैनिक कार्य में इसका प्रयोग करने के लिए प्रेरित होंगे।

मुझे आशा है कि अभिव्यक्ति का यह अंक आपको पसंद आएगा। अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं, ताकि हम इस पत्रिका के आगामी अंकों को आपकी अपेक्षाओं के अनुसार बना सकें। मैं भविष्य में इस पत्रिका के अनवरत प्रकाशन की मंगल कामना के साथ उन सभी कर्मचारियों के योगदान की सराहना करता हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका के लिए रचनाओं का योगदान दिया है।

विवेक खनेजा

(विवेक खनेजा)
कार्यकारी निदेशक
सी-डैक, नोएडा

संपादकीय

भाषा मानव विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। सूचना प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर के बढ़ते प्रयोग के फलस्वरूप हिंदी ने विभिन्न भाषाओं के अनेक प्रचलित शब्दों को अपने शब्द भण्डार में आत्मसात कर लिया है और विभिन्न वैज्ञानिक संस्थाओं में कार्यरत तकनीकी कर्मचारी भी इन शब्दों को अपने दैनिक कार्य में प्रयोग करने लगे हैं। प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक) भारत सरकार की एक वैज्ञानिक संस्था है, जहां सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी सेवाओं का विकास किया जाता है। जो मानव ऊर्जा इस क्षेत्र में कार्यरत है, वह भी इस परिवर्तन से अछूती नहीं रही है। पिछले कुछ वर्षों से तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग लगातार बढ़ता जा रहा है। तकनीकी शब्दों को रूपांतरण द्वारा अपनाकर हिन्दी भाषा अपने शब्द भण्डार में निरंतर वृद्धि कर रही है।

गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" के इस अंक के लिए इस केन्द्र के कर्मचारियों ने कहानी, कविता, यात्रा वृतांत और तकनीकी लेखों का महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इससे यह प्रतीत होता है कि सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने में अपना सक्रिय योगदान देने के साथ-साथ वे संघ सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन करने और कार्यालय प्रयोग में इसके प्रयोग को बढ़ावा देने में भी सतत प्रयासरत रहते हैं। प्राप्त रचनाओं में से उत्कृष्ठ एवं ज्ञानोपयोगी रचनाओं का इस पत्रिका के लिए चयन करके यह प्रयास किया गया है कि उन्हें उचित प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए जाएं ताकि होनहार एवं उभरते रचनाकारों का मनोबल बढ़ाया जा सके।

जिन अधिकारियों ने विभिन्न विषयों पर उपयोगी लेख, कहानी और कविताओं, तकनीकी लेखों का योगदान देकर इस पत्रिका के बारहवें अंक को रोचक और पठनीय बनाया है, वे प्रशंसा एवं साधुवाद के पात्र हैं। इस पत्रिका के बारे में हमें आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा, क्योंकि यह और अधिक उत्साह एवं प्रेरणा के साथ आगामी अंकों को रोचक और ज्ञानवर्धक बनाने में हमारा पथ-प्रदर्शन करती हैं।

शुभकामनाओं के साथ,

- संपादक

♦♦♦

नेटवर्क सूचना प्रणाली (एन.आई.एस.)

- हिमानी गर्ग
परियोजना अभियंता

नेटवर्क सूचना प्रणाली (एन.आई.एस.) क्या है?

यह साइट इंफ्रास्ट्रक्चर यानी हार्डवेयर और नेटवर्क की निगरानी, नियंत्रण और प्रबंधन के लिए एक स्मार्ट सॉल्यूशन है। यह नेटवर्क, स्टोरेज और कनेक्टिविटी से संबंधित समस्याओं का समाधान करने के लिए हेल्पडेस्क और उपयोगकर्ताओं (यूजर्स) को त्वरित हल प्रदान करता है। यह अपडेट, अलर्ट और तत्काल सूचनाओं को प्रसारित करने में सहायता करता है।

यह एप्लिकेशन किसी सिस्टम पर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर की समस्या के बारे में संक्षिप्त जानकारी संग्रहित करता है। जब भी उपयोगकर्ता (यूजर) सिस्टम में लॉग-इन करता है तो यह उसे त्वरित सूचनाएं उपलब्ध कराता है।

समस्या का विवरण (प्रोबलम स्टेटमेंट)

विभिन्न स्थानों पर उपयोगकर्ताओं के बीच किसी भी प्रोजेक्ट के कार्यान्वयन के साथ, किसी भी संगठन के उपयोगकर्ताओं द्वारा सिस्टम के प्रदर्शन को लेकर काफी समस्याएं रहती हैं। जैसेः इंटरनेट कनेक्टिविटी संबंधी मुद्दे, स्कैंटी (scanty), बैंडविड्थ, कम कॉन्फिगरेशन वाले कंप्यूटर और फर्स्ट जनरेसन (पहली पीढ़ी) के शिक्षार्थी (लर्नरस) इत्यादि।

किसी भी एप्लिकेशन को लागू करने और चलाने (रनिंग) के दौरान लगातार सामने आने वाली समस्याएं/प्रश्न निम्न हैं :

- हर साइट पर इंटरनेट की गति (स्पीड) और बैंडविड्थ क्या है?
- क्या वे सर्वश्रेष्ठ देखे गए (best viewed) ब्राउजर और उसके वर्जन (version) पर एप्लिकेशन को चला रहे हैं?
- क्या लॉग-इन आई.डी. उपयोगकर्ताओं के बीच सांझा की गई है?
- क्या हर साइट पर बेसिक हार्डवेयर, आवश्यकताओं के अनुसार इन्सटाल/स्थापित किया गया है?

ओरिजन (origin)

इन मुद्दों को हल करने के लिए या तो एंड यूज़र्स (अंत उपयोगकर्ताओं) को संबंधित गतिविधियों के लिए कंप्यूटर साक्षर/प्रशिक्षित होने की आवश्यकता होती है या दूरस्थ कंप्यूटर पर स्वतंत्र सॉफ्टवेयर स्थापित किए हुए होने चाहिए, जहां कंपनियां सॉफ्टवेयर ब्रेकडाउन को एसेस (access) करके विश्लेषण कर सकती हों। इस दृष्टिकोण को मद्देनज़र रखते हुए, सी-डैक, नोएडा ने 'एन.आई.एस.' नाम से एक डेस्कटॉप एप्लिकेशन विकसित किया है, जो समग्र प्रणाली (सिस्टम) और नेटवर्क की जानकारी उपलब्ध कराता है और सॉफ्टवेयर कार्यान्वयनकर्ताओं को विभिन्न साइटों पर उपयोगकर्ताओं द्वारा सामना (face) किए गए मुद्दों का विश्लेषण करने में सहायता करता है।

आर्किटेक्चर (ARCHITECTURE)

एन.आई.एस. एक बहुत ही प्रारंभिक आर्किटेक्चर का अनुसरण करता है, जो इलेक्ट्रॉन (Electron) ढ़ाचे पर विकसित होता है, यह क्रोडियम रेडरिंग इंजन (Chromium rendering engine) और Node.js. को जोड़ता है। इलेकट्रॉन अतिरिक्त रूप से बाहर से कनेक्शन प्राप्त करने और सर्वर यानि https सर्वर के रूप में कार्य करने की सुविधा प्रदान करता है।

इस सर्वर को CORS (क्रास-ओरिजनल रिसोर्स शेयरिंग) सर्वर के रूप में कार्य करने के लिए विशेष रूप से विकसित किया गया है, जो एक वेब पेज पर प्रतिबंधित संसाधनों को डोमेन के बाहर किसी अन्य डोमेन से अनुरोध करने की अनुमति देता है, जिसमें से पहला रिसोर्स सर्वड (served) किया गया था।

यही, सर्वर HMIS (हॉस्पिटल मैनेजमेंट इन्फर्मेशन सिस्टम) के साथ एक सुरक्षित कनेक्शन स्थापित करके NIS से HMIS (या किसी अन्य वेब एप्लिकेशन) से सिस्टम की समस्त डिटेल प्राप्त करता है और इसको कुछ बेंचमार्क मूल्यों के पैटर्न के अंतर्गत NIS सिस्टम डाटा इन्फर्मेशन को प्रस्तुत करता है। जिस पर सिस्टम को तर्कसंगत (रेशनलाइज) बनाने के लिए तात्कालिक परिदृष्य की जांच की जाएगी और इसकी नेटवर्क आवश्यकताओं को क्रंच (crunch) किए बिना वेब एप्लिकेशन की सभी सर्विसेज को सफलतापूर्वक उपयोग करने के लिए चिन्हित किया जाएगा।

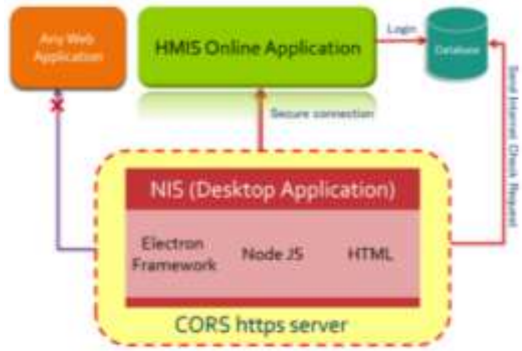

यद्यपि, उपयोगकर्ता (यूजर) व्यक्तिगत रूप से इंटरनेट की जांच करने और एन.आई.एस. के साथ इसकी स्पीड जानने के लिए अनुरोध कर सकता है और इस सूचना को आगे के विश्लेषण और समस्या के समाधान के लिए क्लाउड सर्वर को भेज सकता है।

विशेषताएं (FEATURES)

- सरल और पोर्टेबल निर्वासित (exe) है।
- जिस सिस्टम पर इंस्टॉल किया होता है, उस सिस्टम की डिटेल कैपचर/संग्रहित करता है।
- Ookla के अनुसार यह इंटरनेट की अपलोड और डाउनलोड स्पीड का निर्धारण करता है।
- उपयोगकर्ता (यूजर) द्वारा एप्लिकेशन में लॉग-इन की गई अक्षांश (latitude) और देशांतर (longitude) की जानकारी संग्रहित करता है।
- CORS व्हाइटलिस्ट अवधारणा (कंसेप्ट)।
- ऑटो अपडेट फिक्चर द्वारा ऐप संस्करण अपग्रेडेशन का संस्करण मैनेजमेंट।
- इन-बिल्ट यूजर मैनुअल

प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी)

Electron | Node JS | JQuery | HTML & CSS

निष्कर्ष (Conclusion)

सी-डैक, नोएडा द्वारा विकसित “एन.आई.एस.-नेटवर्क सूचना प्रणाली” दूरदराज के स्थानों पर कार्य करने वाले यूजर्स (उपयोगकर्ताओं) की सबसे आम समस्याओं को हल करने की दिशा में

प्रथम प्रयास माना जा सकता है, जहां सिस्टम तक पहुंच और मानव भागीदारी अत्यंत कठिन होती है।

इस सॉल्यूशन के साथ, कार्यान्वयनकर्ता और डेवलपर्स बेहतर कनेक्टिविटी और कम बैंडबिड्थ खपत वाले एप्लिकेशनस को डिजाइन करने पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं। अनुभवी सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट वाले संगठन ऐसे सॉफ्टवेयर को एप्लिकेशनस के साथ कार्यान्वित या एकीकृत कर सकते हैं, जहां सॉफ्टवेयर उपयोग में प्रयोज्य, विश्वसनीयता और स्थिरता एक चुनौती होती है।

इसके अतिरिक्त टेक्निकल टीमें, मैनेजर व प्राधिकारी हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किए गए "डिजिटल इंडिया इनिशिएटिव" कार्यक्रम के अंतर्गत अपने राज्य में सॉफ्टवेयर की सक्रियता (reachability) की निगरानी कर सकते हैं। इस सॉफ्टेयर के साथ उपयोगकर्ता (यूजर्स) नवीनतम तकनीकों के साथ कार्य करने पर अधिक ध्यान केन्द्रित करेगा और सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकियों के प्रति और अधिक साक्षर (literate) हो जाएगा।

♦♦♦

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

साइबर जागरूकताः मिलकर बनाएं एक बेहतर कल

- डॉ. नेहा बाजपेई
प्रधान तकनीकी अधिकारी

साइबर क्राइम, कंप्यूटर्स और इंटरनेट के द्वारा की गई किसी भी तरह की अपराधिक गतिविधियों को कहा जाता है। साइबर क्राइम के माध्यम से कोई भी हैकर दूर बैठकर आपके महत्वपूर्ण दस्तावेजों या आपकी निजी महत्वपूर्ण जानकारी को इंटरनेट और कंप्यूटर के माध्यम से चुराकर उसका गलत उपयोग कर सकता है। आज जहां हम सभी ग्लोबल और डिजिटलाइजेशन की तरफ तेजी से बढ़ रहे हैं, वहीं अज्ञानतावश साइबर अपराध के शिकार हो रहे हैं। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी इंटरनेट और डिजिटल चकाचौंध की तरफ आकर्षित होकर दिन भर उसी में लगे रहते हैं, चाहे ऑनलाइन गेम्स हों या ऑनलाइन मूवीज़, ऑलाइन बैंकिंग हो या ऑनलाइन शॉपिंग, ऑनलाइन शिक्षा हो या ऑनलाइन जॉब पोर्टल, ऑनलाइन टैक्सी बुकिंग हो या होटल बुकिंग, ऑनलाइन समाचार पढ़ना हो या सोशल मीडिया पर समय बिताना हो। साइबर अपराधी इसी का फायदा उठाकर बैंको से धोखाधड़ी, फेसबुक क्लोनिंग, ई-मेल हैकिंग, फ़ेक आई.डी., फ़ेक मैसेज़ आदि अपराध करते हैं। कोरोना वायरस महामारी में साइबर अपराधी और भी ज्यादा सक्रिया हो गए हैं। भारत सरकार लगातार ऑनलाइन साइबर अपराध के विषय में जनता को सतर्क कर रही है।

आइए कोरोना महामारी के समय होने वाले कुछ साइबर अपराध को जाने-

1. **फर्जी ई-मेल-** साइबर अपराधी जनता को कोरोना वायरस से संबंधित कई फर्जी ई-मेल भेज रहे हैं। इन फर्जी ई-मेल से किसी मैलवेयर युक्त लिंक पर क्लिक करने के लिए जनता को आकर्षित किया जाता है, जिसके उपरांत साइबर अपराधी उनकी निजी महत्वपूर्ण जानकारी उनके कंप्यूटर से चुराकर उसका दुरूपयोग करते हैं।

2. **फर्जी एस.एम.एस.-** आजकल ज्यादातर लोग स्मार्ट फोन का इस्तेमाल बैंकिंग लेन-देन, ऑनलाइन शॉपिंग, ई-मेल और एस.एम.एस. देखने और भेजने, सोशल मीडिया आदि में करते हैं इन्सटेंट मैसेज/एम.एम.एस. के द्वारा साइबर अपराधी डिस्काउट्स और बड़ी मात्रा में सेल जैसे लिंक भेजते हैं, जिसको जनता उत्सुकतावश देखकर क्लिक कर देती है। इसके उपरान्त साइबर अपराधी उनके मोबाइल का डाटा चुरा लेते हैं अथवा Spy Apps डाउनलोड कर लेते हैं।

3. **पी.एम. केयर्स की नकली आई.डी.-** कोरोना वायरस महामारी के चलते हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पी.एम. केयर्स फंड की घोषणा की थी, जिसके उपरांत साइबर अपराधियों ने पी.एम. केयर्स की ही नकली आई.डी. बनाकर जनता को लूटना शुरू कर दिया।

4. फेसबुक क्लोनिंग- साइबर अपराधी फेसबुक से यूजर्स की डिटेल्स, फोटोग्राफ्स और मित्रों की जानकारी इकट्ठी करते हैं। इसके पश्चात उनका उपयोग करके एक फर्जी प्रोफाइल तैयार करते हैं और उसी के मित्रों को Friend Request भेजते हैं। आपके दोस्त आपकी फोटो और नाम देखकर उसे Friend Request को Accept कर लेते हैं, जिसके पश्चात साइबर अपराधी उनसे कोई आवश्यक कार्य दिखाकर उधार, पैसों की मांग करते हैं। आपके दोस्त साइबर अपराधी के झांसे में आकर उन्हें पैसा ट्रांसफर कर देते हैं।

साइबर अपराधी ऐसे कई प्रकार से यूजर्स की व्यक्तिगत और आर्थिक, वित्तीय जानकारी चुराकर उन्हें नुकसान पहुंचा रहे हैं। आइए इनसे बचने के कुछ उपाए जाने और मिलकर साइबर जागरूकता की तरफ कदम बढाएं और एक बेहतर कल बनाएं-

- अपने ऑपरेटिंग सिस्टम में ऑटो अपडेट को सक्रिय कर नियमित रूप से अपडेट करते रहें।
- पाइरेटेड सॉफ्टेयर का इस्तेमाल न करें।
- ट्रांजेक्शन तथा शॉपिंग सदैव सुरक्षित वेबसाइट से करें।
- क्रेडिट/डेबिट कार्ड से खरीददारी के बाद वेबसाइट से लॉगऑफ होकर ब्राउजर कुकीज को डिलीट करना न भूलें।
- फिशिंग स्कैम का पता लगाने के लिए सभी ई-मेल संदेशों को ध्यान से पढ़ें। आर्थिक या निजी जानकारी मांगने वाले मेल का जवाब न दें। क्योंकि बैंक कभी भी ऐसी जानकारी आपसे नहीं मांगते हैं।
- नेटबैंकिंग के लिए सदैव वर्चुअल की-बोर्ड का इस्तेमाल करें।
- बैंक से ए.टी.एम. कार्ड मिलने पर तुरंत उचित स्थान पर अपने हस्ताक्षर करें और कार्ड के आखरी तीन नंबरों को याद कर मिटा/छुपा दें।
- ए.टी.एम. का इस्तेमाल करने से पहले देख लें कि इंसर्शन पैनल पर किसी प्रकार की दूसरी Shield/वस्तु न रखी गई हो।
- ट्रांजेक्शन जालसाजी से बचने के लिए क्रेडिट कार्ड की रसीद को संभाल कर रखें।
- किसी unknown स्रोत से आए ई-मेल अटेचमेंट को न खोलें या किसी ई-मेल में आए लिंक पर क्लिक न करें।
- हमेशा स्ट्रांग पासवर्ड के साथ Salting Algorithm का भी प्रयोग करें।
- ऑनलाइन ट्रांजेक्शन के लिए हमेशा एक अलग अकाउंट रखें, उसमें थोड़ा ही पैसा डालें।
- कभी ऐसे लिंक पर क्लिक न करें जो कहते हैं कि इस लिंक पर क्लिक करने से आपका मोबाइल पूरा चार्ज हो जाएगा या कंप्यूटर की सेटिंग्स बदल जाएगी।
- निःशुल्क एंटीवायरस या एंटीस्पायवेयर सॉफ्टवेयर किसी भी वेबसाइट से डाउनलोड कर इंस्टाल न करें जब तक कि उसके विषय में पूरी जानकारी न ले लें।

- अपने ब्राउजर की Defult सेटिंग्स को Change करें और लॉगिन पासवर्ड को याद रखने की सेटिंग को Change करें।
- हमेशा incognito Window या Private Browsing का इस्तेमाल करें।
- हमेशा याद रखें कि किसी से पैसा लेते वक्त OTP की जरूरत नहीं पड़ती है।
- Two Step Verification का प्रयोग करें।
- फेसबुक क्लोनिंग से बचने के लिए प्राइवेसी चेकअप करें। अपने दोस्तो की लिस्ट को छुपाकर रखें।
- सोशल मीडिया अकाउंट्स जैसे फेसबुक, वाट्सएप, इंस्टाग्राम, Twitter आदि में Privacy Settings enable करें।
- किसी भी वेबसाइट में अपने Login evedentials डालने से पहले उसका URL ध्यान से पढ़ें।
- किसी भी URL को Check करने के लिए Catchphish, URLvoid, Nibbler Silk tide जैसी website की सहायता लें। इनको गूगल ब्राउजर में टाइप कर इनके बारे में और जानकारी प्राप्त करें।
- Covid-19 के बारे में Information देने और मास्क या सेनिटाइजर सस्ते दामों में बेचने वाली वेबसाइट के URL को ध्यान से चेक करें।
- वाट्सअप में आए हर मैसेज को ध्यान से चेक करके ही आगे किसी को फारवर्ड करें। वो एक Fake News या मैसेज भी हो सकता है। कई वेबसाइट्स फेक न्यूज का पता लगाने में हमारी सहायता करती हैं।
- आपका फेसबुक अकाउंट आपके दोस्तों से कैसा दिखेगा इसकी जांच करें।
- 'ऑफ फेसबुक एकटिविटी' को ऑफ करके रखें जिससे कि आपकी ऑनलाइन आदतों और रूचियों को फेसबुक एडवरटाइजर्स (Advertisers) के साथ शेयर न करें।
- ई-मेल द्वारा आई डबल एक्सटेंशन वाली Attachments को कभी न खोलें।
- अपने System के History Folder को समय-समय पर Clear करते रहें।

आज के दौर में इंटरनेट हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है, लेकिन इंटरनेट पर जरा सी ना समझी साइबर अपराधी को निमंत्रण दे सकती है। कैशलेस अर्थव्यवस्था को पूर्ण रूप से अपनाने की दिशा में बढ़ने के कारण भारत में साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। डिजिटल भारत की सफलता काफी हद तक साइबर सुरक्षा पर निर्भर करेगी। अगर हम सब मिलकर ऊपर बताए बिंदुओं पर गौर करेंगे और इनका पालन करेंगे तो हम इस कथन को पूरी तरह से सार्थक कर पाएंगे।

"साइबर जागरूकता - मिलकर बनाएं एक बेहतर कल"

♦♦♦

वैक्सीन का महत्व

- अमिय मोहंती
परियोजना अभियंता

संदर्भ

वैश्विक महामारी COVID-19 के प्रसार की प्रारंभिक अवस्था से ही व्यक्तिगत सतर्कता के साथ वैक्सीन को इस महामारी के नियंत्रण हेतु अंतिम विकल्प बताया जाता रहा है। भारत सहित विश्व के लगभग सभी देश अपने स्तर पर वैक्सीन निर्माण की दिशा में कार्य कर रहे हैं। हाल ही में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय **(Oxford University)** के वैज्ञानिकों द्वारा संचालित एक प्रायोगिक कोरोना वायरस वैक्सीन के शुरूआती परीक्षण के दौरान सैकड़ों लोगों में सुरक्षात्मक प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया **(Protective Immune Response)** में वृद्धि देखने को मिली है। **'लैंसेट' (Lancet)** जर्नल में प्रकाशित एक शोध के अनुसार, वैज्ञानिकों ने अपने परीक्षण में पाया कि यह प्रायोगिक वैक्सीन 18 से 55 वर्ष की आयु के लोगों में एक दोहरी प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है।

सामान्यतः इस तरह के शुरूआती परीक्षणों का उद्देश्य वैक्सीन की सुरक्षा का मूल्यांकन करना होता है, परंतु इस परीक्षण के दौरान विशेषज्ञ इस बात का भी अध्ययन कर रहे थे कि यह वैक्सीन किस प्रकार की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को प्रेरित करती है। परीक्षण में पाया गया कि किसी व्यक्ति को यह वैक्सीन दिये जाने के बाद उसमें लगभग 56 दिनों तक यह मज़बूत एंटीबॉडी और टी-सेल प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं को प्रेरित करती है। वैज्ञानिकों के अनुसार, ऐसे अनेक प्रमाण मिले हैं कि COVID-19 को नियंत्रित करने में टी-सेल और एंटीबॉडी की प्रतिक्रिया क्षमता अत्यंत महत्त्वपूर्ण साबित हो सकती है।

इस आलेख में वैक्सीन निर्माण के विभिन्न चरण तथा परीक्षण की अनुमति व उससे संबंधित नैतिक मुद्दों पर विमर्श किया जाएगा।

वैक्सीन से तात्पर्य

- किसी संक्रामक बीमारी के विरुद्ध प्रतिरोधात्मक क्षमता (Immunity) विकसित करने के लिये जो दवा ड्रॉप्स, इंजेक्शन या किसी अन्य रूप में दी जाती है, उसे टीका (vaccine)

कहते हैं तथा यह क्रिया टीकाकरण (Vaccination) कहलाती है। संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिये टीकाकरण सर्वाधिक प्रभावी विधि मानी जाती रही है।

- टीकाकरण व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर शरीर में उत्पन्न होने वाले सूक्ष्म जीवों को नष्ट करने का काम करता है।
- टीकाकरण स्वास्थ्य निवेश के सबसे कम लागत वाले प्रभावी उपायों में से एक है। टीकाकरण के लिये जीवन शैली में कोई विशेष परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं होती थी, परन्तु कोरोना वायरस के प्रसार के बाद जीवन शैली में विशेष परिवर्तन किये जाने की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है।

वैक्सीन निर्माण की प्रक्रिया

- किसी भी वैक्सीन को तैयार करने में कई चरण शामिल होते हैं, जो शोध एवं अनुसंधान से प्रारंभ होकर विनिर्माण, गुणवत्ता नियंत्रण और वितरण तक विस्तृत है। वैक्सीन निर्माण के निम्नलिखित चरण होते हैं-
- **शोध एवं अन्वेषण (Exploratory stage):** वैक्सीन निर्माण में शोधरत वैज्ञानिक प्राकृतिक और कृत्रिम एंटीजन (Antigen) की पहचान करते हैं, जो किसी भी बीमारी की रोकथाम में मदद कर सकता है। एंटीजन की पहचान सुनिश्चित होने के बाद इसका संश्लेषण कर प्रतिरक्षी प्रतिक्रिया को प्रेरित करने का कार्य किया जाता है। इस चरण में रोगाणुओं की वृद्धि और उनका संग्रह या उस रोगाणु से किसी रिकंम्बिनेंट प्रोटीन (ऐसा प्रोटीन जिसे डीएनए तकनीक से बनाया जाता है) का निर्माण करना जैसी प्रक्रिया शामिल है।
- **नैदानिक पूर्व (Pre Clinical):** इसमें कोशिका संवर्धन प्रणाली का उपयोग किया जाता है और इसका जंतुओं पर परीक्षण किया जाता है, इससे वैक्सीन की प्रभावकारिता सुनिश्चित होती है। परीक्षण के क्रम में चूहों, बंदरों और खरगोश इत्यादि पर टीके का प्रयोग किया जाता है। इस चरण में वैज्ञानिक इस तथ्य का परीक्षण करना चाहते हैं कि

क्या वैक्सीन से जंतु या पौधे में प्रतिरोधी क्षमता उत्पन्न होती है या नहीं। यदि प्रतिरोधी क्षमता उत्पन्न नहीं होती है तो पुनः प्रथम चरण से प्रारंभ करते हैं, और यदि प्रतिरोधी क्षमता विकसित हो जाती है तो तृतीय चरण में प्रवेश करते हैं।

- **नैदानिक परीक्षण (Clinical Trial):** यह चरण वैक्सीन के विकास में सबसे संवेदनशील और अहम होता है क्योंकि इसमें कोशिका संवर्धन प्रणाली के माध्यम से जंतु या पौधों में उत्पन्न प्रतिरोधी क्षमता का परीक्षण मानव शरीर पर किया जाता है। इस चरण में तीन फेज़ शामिल होते हैं, जो इस प्रकार हैं-

  फेज़ 1- इसमें वैक्सीन का इस्तेमाल लोगों के छोटे समूह (लगभग 20 से 80 लोग) पर किया जाता है और यह परीक्षण किया जाता है कि वैक्सीन का प्रभाव मानव शरीर पर किस प्रकार से पड़ रहा है। पर्यवेक्षण की इस अवधि में वैक्सीन की मात्रा (Doses) व समय का विशेष ध्यान रखा जाता है।

  फेज़ 2- लोगों के जिस समूह को वैक्सीन दी जानी है, उसमें वृद्धि कर इसे सैकड़ों व्यक्तियों की संख्या तक ले जाया जाता है। इसमें वैक्सीन की मात्रा (Doses) में परिवर्तन किया जाता है और वैक्सीन की अनुकूल तथा प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता का भी विश्लेषण किया जाता है। इस अवस्था में सभी आयु वर्ग के लोगों को शामिल करने का प्रयास किया जाता है। इसमें औसतन 8 से 12 माह का समय लगता है।

  फेज़ 3- इस अवस्था में कई हजार लोगों के समूह पर वैक्सीन का परीक्षण किया जाता है और यह आंकलन करने की कोशिश की जाती है कि वैक्सीन बड़ी जनसँख्या में किस प्रकार प्रभाव उत्पन्न करती है। इस अवस्था में वैक्सीन के दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। जब यह सिद्ध हो जाता है कि परीक्षण के सभी उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया गया है तो इसे नियामकीय समीक्षा हेतु आगे बढ़ा दिया जाता है।

- **नियामकीय समीक्षा व अनुमोदन** (Regulatory review and Approval): इस अवस्था में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित मानकों के आधार पर 'ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया' (Drug Controller General of India- DCGI) द्वारा वैक्सीन परीक्षण के सभी चरणों की समीक्षा की जाती है। इसके पश्चात उस वैक्सीन के विनिर्माण का अनुमोदन किया जाता है।
- **विनिर्माण और गुणवत्ता नियंत्रण** (Manufacturing and quality control): इस अवस्था में बेहतर अवसंरचना के साथ वैक्सीन के विनिर्माण का कार्य प्रारंभ किया जाता है। वैक्सीन की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिये समय-समय पर वैज्ञानिकों तथा विनियामक प्राधिकरणों के माध्यम से गुणवत्ता परीक्षण का कार्य किया जाता है।

नैदानिक परीक्षण की चुनौतियाँ

- भारत में नैदानिक परीक्षण से संबंधित स्पष्ट व कारगर नीति के अभाव में कई अनियमितताएँ देखने को मिलती हैं। एक आँकड़े के अनुसार, वर्ष 2007 से 2019 के दौरान पूरे देश में लगभग 4800 लोगों की मृत्यु नैदानिक परीक्षणों के कारण हुई है।
- भारत में नैदानिक परीक्षण से संबंधित सबसे बड़ी समस्या नियामकीय विफलता है। आय की पूरकता के लिए वालंटियरों की बड़ी संख्या स्वेच्छा से नैदानिक परीक्षणों में भाग लेती है। बेहतर नियामकीय ढाँचे के अभाव में वालंटियरों के स्वास्थ्य से संबंधित कई महत्त्वपूर्ण आँकड़ों व तथ्यों की उपेक्षा कर दी जाती है, जो न केवल वालंटियरों के स्वास्थ्य को जोखिम में डालती है बल्कि परीक्षण के आँकड़ों पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है।
- दूसरी समस्या अनैतिक नैदानिक परीक्षण से संबंधित है जिसमें नकली दवाओं व उपकरणों की जाँच के लिये दवा कंपनी व डॉक्टरों की मिलीभगत से रोगियों व वालंटियरों से सच्चाई छुपाई जाती है, जिसका कुप्रभाव लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ता है।
- कई बार नैदानिक शोध संस्थानों (CROs) द्वारा लोगों की वित्तीय आवश्यकताओं और अज्ञानता का लाभ उठाकर उनका शोषण किया जाता है। इस प्रकार की अनियमितताओं से संबंधित कई उदाहरण हाल के वर्षों में प्रकाश में आए हैं। वर्ष 2009 में एच.पी.वी. टीके के लिये 24000 लड़कियों को नामांकित किया गया था, बाद में जाँच में पता चला कि इनको झूठी जानकारियाँ प्रदान की गई थीं।

निष्कर्ष

ध्यातव्य है कि वैक्सीन निर्माण में अत्यधिक समय लगता है। COVID-19 की विभीषिका को देखते हुए सभी देशों व शोध एवं अनुसंधान संगठनों को सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि उपलब्ध संसाधनों का सदुपयोग करते हुए शीघ्र ही वैक्सीन का निर्माण किया जा सके। भारत में भी भारत बायोटेक कंपनी द्वारा COVID-19 की वैक्सीन को 'भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद' (Indian Council of Medical Research- ICMR) तथा 'राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान' (National Institute of Virology- NIV) के सहयोग से विकसित किया जा रहा है।

♦♦♦

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसः मानव संसाधन विभाग के लिए सुनहरा भविष्य

- आशु कृष्णा
संयुक्त निदेशक

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जिसे लोकप्रिय रूप से एआई (AI) के रूप में जाना जाता है, प्रौद्योगिकी की दुनिया में सबसे शक्तिशाली रूप में उभर रहा है और यह वर्तमान दुनिया को बहुत प्रभावित करने की क्षमता रखता है। एआई की पूर्ण क्षमता अभी भी अव्यक्त है और यह वहां तक जा सकती है, जहाँ तक हमारी कल्पना जाती है।

ऋषि अरोरा, प्रबंध निदेशक, फाइनेंसियल सर्विसेज एक्सेंचर के कथनानुसार, एआई अब मुख्यधारा में दिखाई दे रहा है और एआई को अपनाने से सन 2035 तक भारतीय अर्थव्यवस्था में लगभग $1 ट्रिलियन की क्षमता जुड़ सकती है।

लेकिन एआई गोद अभी भी अपने नवजात चरण में है और इसके रणनीतिक विकास और पूर्ण क्षमता का एहसास करने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण की आवश्यकता है। मैकिन्से का नवीनतम पूर्वानुमान है कि एआई 2030 तक वैश्विक आर्थिक गतिविधियों में $13 ट्रिलियन का उत्पादन करेगा।

भारत के लिए AI कोई नई बात नहीं है। अनुसंधान संस्थान और विश्वविद्यालय दशकों से विभिन्न AI प्रौद्योगिकियों के साथ काम कर रहे हैं। सेल्फ ड्राइव कारों, वीआर और रोबोट, चैटबॉट और रोबोटिक्स की उन्नति ने इसे सार्वजनिक पहचान दी है। वैज्ञानिक प्रगति और लागत प्रभावशीलता ने एआई और इसके भविष्य के बारे में आशातीत परिवर्तन और उत्साह उत्पन्न कर दिया है - इस प्रकार यह नवीनतम चर्चा में है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सामूहिक बातचीत और डेटा एनालिटिक्स (डीए), मशीन लर्निंग (एमएल), डीप लर्निंग (डीएल), रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन (आरपीए), नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एनएलपी), स्पीच रिकग्निशन (एसआर) जैसी कई तकनीकों का एक गुलदस्ता है।

उन्नीसवीं सदी के पांचवें दशक में ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अस्तित्व में आ गया था, किन्तु इसे आवश्यक महत्त्व अब मिल रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शुरुआत के बाद से ही लोगों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभों और जोखिमों पर बहस आरम्भ कर दी थी। इसने नवीनतम

शोध द्वारा अपनी क्षमताओं में इजाफ़ा किया है और तुलनात्मक रूप से इसके उचित एवं सुरक्षित प्रयोग से एआई हानिकारक होने की तुलना में अधिक लाभकारी एवं सहायक है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव संसाधन का सहायक बन सकता है: यह सत्य है, मिथक नहीं

जीवन और व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों की तरह, AI मानव संसाधन प्रबंधन को बड़े पैमाने पर प्रभावित करने के लिए तैयार है। एआई कर्मचारी भर्ती से लेकर, कर्मचारी के निकास या विस्थापन तक एचआर मैट्रिक्स में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह भर्ती, प्रशिक्षण, कैरियर विकास, पदोन्नति, प्लेसमेंट, पारिश्रमिक, पुरस्कार, प्रतिधारण, रिकॉर्ड और सक्षमता विकास में अमूल परिवर्तन ला सकता है।

मानव संसाधन प्रबंधकों को अपने संगठनों को 'वैल्यू एडिशन' (मूल्य संवर्धन) के लिए एआई आधारित समाधानों के कार्यान्वयन और एआई के सभी पहलुओं को समझने के साथ साथ सभी लाभों और जोखिमों का आंकलन करने की आवश्यकता है। एचआर में डेटा एनालिटिक्स और मशीन लर्निंग के साथ-साथ पायलट एआई को लागू करके यह आसानी से क्रियान्वित किया जा सकता है।

भर्ती के लिए चैटबॉट्स, कर्मचारी सेवाओं, कर्मचारी विकास और कोचिंग के लिए एआई को मानव संसाधन मैट्रिक्स में जोड़ा जा सकता है। वर्तमान में, मानव संसाधन के लिए एआई-आधारित समाधान डेटा द्वारा संचालित और विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति पर आधारित है, लेकिन एआई के अन्य प्रारूपों का इस क्षेत्र में अब तक ऐसा उपयोग नहीं देखा गया है।

मानव संसाधन (एचआर) सिस्टम में एकीकृत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), डेटा की विशाल सारणी का विश्लेषण करने, व्यवहार विश्लेषण के माध्यम से भविष्यवाणी करने और व्यवहार तथा अन्य पैटर्न का विश्लेषण करने की अपनी क्षमताओं को प्रयोग करते हुए संगठनों को और बेहतर बनाएगा और इस तरह बेहतर निर्णय लेने में एचआर टीमों की मदद करेगा।

वर्तमान परिदृश्य में भर्ती और प्रतिभा अधिग्रहण में एआई आधारित समाधानों को अधिक उपयोगी माना जा रहा है, हालांकि प्रशिक्षण और प्रदर्शन मूल्यांकन जैसे अन्य क्षेत्रों में बड़ी संभावनाएं हैं। एआई को प्रभावी ढंग से विभिन्न गतिविधियों के लिए उपयोग किया जा सकता है जैसे:-

- सोर्सिंग और भर्ती
- साक्षात्कार और ऑन-बोर्डिंग
- कोचिंग, प्रशिक्षण और विकास
- प्रदर्शन का मूल्यांकन
- कर्मचारी प्रतिधारण और कर्मचारी सेवाएं
- कर्मचारी पारिश्रमिक, भत्तों और पुरस्कार और मान्यता

मानव संसाधन विभाग इस दौड़ में पीछे नहीं है

मानव और कृत्रिम बुद्धि की प्रौद्योगिकियों के संयोजन का लाभ उठाने की प्रक्रिया को मानव संसाधन विभाग स्वचालित कर सकता है। यह एक सरल, सहज और सहज कार्य वातावरण बना सकता है। एचआर की प्रक्रिया और प्रणाली में कृत्रिम बुद्धि का उपयोग मानव संसाधन प्रबंधकों और मानव संसाधन लीडर्स को पर्याप्त अवसर प्रदान करता है ताकि वे बेहतर कर्मचारी अनुभव के लिए रचनात्मकता, सहानुभूति और बुद्धिमत्ता का उपयोग कर सकें।

भर्ती के अलावा, AI में एचआर रणनीति और कर्मचारी प्रबंधन, कंपनी की नीतियों और प्रथाओं का विश्लेषण करने, पेरोल प्रबंधित करने, कार्यबल को स्वचालित करने, कॉर्पोरेट अनुपालन की जांच करने, मुकदमेबाजी की रणनीति, सफलता और उत्तराधिकारी आदि का विश्लेषण करने की क्षमता है।

उम्मीदवार के प्रोफाइलिंग, प्रदर्शन विश्लेषण, प्लेसमेंट, पदोन्नति और प्रशिक्षण की आवश्यकता के लिए मूल्यांकन हेतु एचआर विश्लेषिकी का उपयोग कर सकता है जो लागत और समय प्रभावी होगा।

भर्ती और मानव संसाधन (HR)

"भर्ती के लिए एआई का उपयोग मानव व्यवहार के दौरान होने वाले व्यवहार और अवधारणात्मक पूर्वाग्रह को समाप्त करता है"- रिचर्ड कोम्बेस। डेलोइट में एचआर परिवर्तन अभ्यास के लीडर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग भर्ती प्रक्रिया को स्वचालित करने में एक बड़ी भूमिका निभाता है जो न केवल कम जनशक्ति की भागीदारी के कारण प्रभावी है, बल्कि कई आयामों के माध्यम से प्रक्रिया की स्क्रीनिंग करने में भी मदद करता है और बड़ी संख्या में डेटा को स्कैन करता है, इस प्रकार यह प्रक्रिया को और अधिक व्यापक बनाता है।

परीक्षण और भर्ती प्रक्रिया

यहां तक कि परीक्षण और भर्ती प्रक्रिया को एआई के उचित उपयोग के साथ प्रभावी बनाया जा सकता है। योग्यता की पहचान, योग्यता की रूपरेखा और भर्ती प्रक्रिया के साथ इन्हें जोड़ना और सभी के लिए सबसे उपयुक्त विधि को संरेखित करना कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के साथ प्रभावी बनाया जा सकता है।

पदोन्नति

किसी संगठन की सफलता के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य सही जगह पर सही लोगों की नियुक्ति और प्रदर्शन को पहचानना और तदनुसार पुरस्कृत करना है। AI डेटा एनालिटिक्स का लाभ उठा सकता है और कर्मचारी के प्रदर्शन और भावना को भी ट्रैक कर सकता है। यह कर्मचारियों के प्रदर्शन का विश्लेषण करने और व्यक्तिगत पूर्वाग्रह को समाप्त करने के लिए एचआर टीमों को सक्षम करने में सहायक हो सकता है।

टीम प्रबंधन

एआई का उपयोग टीम की बेहतर समझ और कर्मचारी जुड़ाव में सुधार के लिए भी किया जा सकता है। चैटबॉट और मशीन लर्निंग सहित एआई की क्षमताओं का लाभ उठाया जा सकता है और एचआर विभाग अपने फीडबैक के आधार पर कर्मचारियों तक पहुंचने, उन्हें समझने और सिस्टम में सुधार के लिए अवसरों और समय का उपयोग कर सकता है।

कर्मचारी जुड़ाव

कर्मचारी जुड़ाव एक सतत प्रक्रिया है और यदि संपूर्णता में देखा जाए तो यह एक सरल कार्य नहीं है। एआई-सक्षम चैटबॉट कर्मचारी और एचआर पेशेवरों दोनों को सशक्त और परेशान किए बिना सगाई इंगेजमेंट जारी रखते हुए उन्हें सशक्त बनाते हैं।

अभ्यास और विकास

कुशल कार्यबल को अनुकूलनीय सीखने के कार्यक्रमों के उपयोग के साथ विकसित किया जा सकता है जो कर्मचारियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे। एआई कौशल-अंतराल आंकलन के आधार पर डिजिटल प्रशिक्षण के अवसरों की योजना बना सकता है।

अपनी एकीकृत प्रौद्योगिकियों के साथ एआई न केवल कर्मचारी की प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान करने में मदद करेगा, बल्कि आवश्यकता मूल्यांकन के आधार पर उपयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम की पहचान भी कर सकता है।

हाल ही में ओरेकल और फ्यूचर वर्कप्लेस द्वारा किए गए एक अध्ययन (अक्टूबर, 2019) के अनुसार, एआई ने न केवल कार्य क्षेत्र में लोगों और प्रौद्योगिकी के बीच संबंध बदले हैं, बल्कि यह मानव संसाधन टीमों और प्रबंधकों को भी आकर्षित कर रहा है।

एआई अध्ययन के कुछ प्रासंगिक बिंदु इस प्रकार हैं

• एआई अब और अधिक मुखर होता जा रहा है (पिछले वर्ष के केवल 32% की तुलना में, 50% कर्मचारी अब काम पर एआई के कुछ रूप का उपयोग कर रहे हैं।

• चीन (77%) और भारत में श्रमिकों के बीच एआई को अपनाने की गति फ्रांस (32%) और जापान (29%) जैसी विकसित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में दोगुनी है।

• पुरुषों में महिलाओं की तुलना में एआई का अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है (32% पुरुष आशावादी बनाम 23% महिलाएं)।

• सर्वेक्षण के अनुसार रोबोट निष्पक्ष जानकारी (26%) प्रदान करने, कार्य अनुसूची (34%) बनाए रखने, समस्या सुलझाने (29%) और बजट (26%) के प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में अपने प्रबंधकों से बेहतर कर सकते हैं।

♦♦♦

हिन्दी भारत की सामाजिक संस्कृति की वाहिका है।

-नरेन्द्र मोदी

क्या है पेरेन्टल कन्ट्रोल

- अमिय मोहंती
परियोजना अभियंता

आज कंप्यूटर और स्मार्ट फोन ने आपके और आपके बच्चों के लिये इंटरनेट को आसान बना दिया है। ऐसे में हर उम्र के बच्चे की पहुंच इंटरनेट पर मौजूद उन सामग्रियों तक हो सकती है जिसे उसे नहीं देखना चाहिए या प्रयोग नहीं करना चाहिए। ऐसी सामग्री से बच्चों को बचाना अभिभावकों के लिए काफी कठिन कार्य है। लेकिन कुछ सॉफ्टवेयर की मदद से बच्चों की गतिविधियों पर नजर रखी जा सकती है-

- माता-पिता द्वारा बच्चों के कम्प्यूटर और इंटरनेट के प्रयोग का समय निर्धारित करना।
- जो सामग्री बच्चों के लिए उचित नहीं है उसे ब्लॉक करना।
- इंटरनेट सर्च को बच्चों के लिये अनुकूलित बनाना।
- बच्चों को साइबर बुलिंग आदि के बारे में समझाना।
- बच्चों को इंटरनेट और कम्प्यूटर के प्रयोग की सही जानकारी देना।
- बच्चों को ऑनलाइन सुरक्षित करने के तरीकों के बारे में जानकारी देना।
- इसके अलावा और भी बहुत सी बातें हैं जो पेरेन्टल कन्ट्रोल के अन्तर्गत आती हैं।

बच्चों को अक्सर पता नहीं होता है कि उन्हें क्या करना है। उन्हें जो चीज अच्छी लगती है उसी में लगे रहते हैं। इन सब में सबसे पहले आता है कम्प्यूटर, यह ज्यादातर सभी के पास

होता है जिसमें काम के साथ गेम्स, मूवी, म्यूजिक का भी आनन्द बड़े आराम से लिया जा सकता है।

1. सबसे पहले कम्प्यूटर में बच्चों के लिये एक अलग यूजर अकाउन्ट बनाएं और अपने एकाउन्ट का पासवर्ड उनसे शेयर न करें। आइए विण्डोज 7 में जानते हैं कि बच्चों के लिये अलग एकाउन्ट कैसे क्रियेट करना है।
2. इसके लिये आप Control Panel में जाएं और यहॉ User Accounts को सलेक्ट कीजिये।
3. यहॉ Manage another Accounts पर Click कीजिये।
4. अब Create New Account पर Click कीजिये।
5. यहॉ Standard user पर Click करें और New Account Name में कोई नाम दे दीजिये। आप अपने बच्चे का नाम भी यहॉ डाल सकते हैं, इससे उसको लगेगा कि यह उसी के लिये बना है।
6. अब Create Account पर Click कर करें। इससे आपका Standard user Account बन जाएगा। Standard user Account में पहले से ही कई सारी चीजें Restrictions होती हैं, जैसे आप कोई File Delete नहीं कर सकते हैं। अब वापस Manage Accounts पेज पर जाएं। यहॉ बनाये गये user Account पर Click करें।
7. यहॉ Setup Parental Controls पर Click कीजिये।
8. अब बनाये गये user Account पर Click कीजिये।
9. user Controls page खुल जायेगा। यहॉ parental Controls off होगा, इसे on कीजिये।
10. इसके नीचे Windows Setting दिखाई देंगी। जिसमें Time Limits, Game Ratings और Program Limits Setting दे रखी होगीं। अभी आपको यह सभी off दिखाई दे रही होगी। इन्हें एक-एक करके ऑन कीजिये।

Time Limits Restrictions- यहॉ आपको एक ग्राफ दिखाई देगा यहॉ सप्ताह के दिन और दिन के घण्टो में टाइम दिया गया है, नीले बाक्स का मतलब Blocked है और सफेद बाक्स का मतलब Allowed है, आप दिन में जितने बजे का टाइम Allowed करेंगे, उसके अलावा user Account खुलेगा ही नहीं। इसका अभिप्राय यह है कि अगर आप घर पर नहीं है तो बच्चे कम्प्यूटर नहीं चला पाएंगे।

Game Restrictions- इस आप्शन से आप Games को Control कर सकते हैं, अगर आप चाहते हैं कि बच्चे कोई गेम ना खेलें तो यहाॅ No पर Click करें। इससे विण्डोज का कोई भी Game नहीं चलेगा।

Application Restrictions- अब बारी आती है अन्य Application और software को यहाॅ Click कर आपको आपके Computer के सारे Application और software की List मिल जायेगी। आप जिस भी प्रोग्राम को चाहें, उसे बच्चों के लिये Blocked कर सकते हैं। इसके लिए आपको सिर्फ उस पर टिक लगाना होगा।

♦♦♦

हमें तो हिन्दी भाषा को इस योग्य बना देना है कि वह साधारण से साधारण मजदूर से लेकर अत्यंत विकसित मस्तिष्क के बुद्धिजीवी के दिमाग में समान भाव से विहार सकें।

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

DBMS क्या है?

- गौरव
डी.डी.पी.एम.

DBMS का full form Database Management System है। इसके नाम से ही पता चल रहा है कि इसका उपयोग डेटाबेस को Manage करने के लिए किया जाता है। दरअसल यह एक प्रकार का सॉफ्टवेयर होता है जिसकी मदद से डेटाबेस को Create किया जाता है और इस डेटाबेस में Data insert, update और Delete जैसे टास्क इसी सॉफ्टवेयर की सहायता से ही Perform किए जाते हैं।

यह एक interface provide करता है जिसके जरिए user उस डेटाबेस में डेटा insert और modify भी कर सकता है। किसी application को जरूरत पड़ने पर डेटाबेस access करना पड़ता है। उदाहरण के लिए जब आप फेसबुक पर अपना account बनाते हैं तो आपके द्वारा enter की गई सारी जानकारी facebook के डेटाबेस में स्टोर हो जाती है। इन जानकारियों को देखने के लिए आप facebook के application या website का उपयोग कर सकते हैं, जोकि उस डेटाबेस से लिंक होती ह ।

DBMS का उपयोग बैंकिंग, एयरलाइंस, मिलिट्री, सोशल मीडिया, रेलवे रिजर्वेशन सिस्टम इत्यादि कई क्षेत्रों में किया जाता है।

DBMS के चार मुख्य components होते हैं। डाटा हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और यूजर। यूजर तीन प्रकार के हो सकते हैं, Detabase Administrator (DBA), Application Programmer और End user.

कुछ Populor DBMS के नाम हैं:- MySQL, SQLite, Oracle, IBM DB2, NOSQL आदि।

DBMS मुख्य रूप से 4 प्रकार के होते हैं

1. **Hieraeichical डेटाबेसः** इसका Structure एक Tree के समान होता है जिसमें केवल एक root होता है।

2. **Network डेटाबेसः** इस प्रकार के डेटाबेस में एक Child के एक से अधिक Parents हो सकते हैं।

3. **Relational डेटाबेसः** इस DBMS मॉडल में डाटा के Row और Column के जरिए टेबल के रूप में स्टोर किया जाता है।

4. **Object - Orieuted डेटाबेसः** इस प्रकार के डेटाबेस में डाटा को Object के रूप में Store किया जाता है।

DBMS के कुछ महत्वपूर्ण फायदे निम्नलिखित है

1. डाटा Redundancy को कम करता है।
2. डाटा सुरक्षा प्रदान (Data Security Provide) करता है।
3. Data wigsation की वजह से हम frequently use होने वाला डेटा को कुछ इस तरह स्टोर कर सकते हैं कि उसे शीघ्रता से access किया जा सके।

♦♦♦

अगर एक बच्चा गलत रास्ते पर चला जाता है तो इसके लिए वह बच्चा दोषी नहीं है, वल्कि इसके लिए उसके माता-पिता जिम्मेदार हैं।

- शिव खेड़ा

हिन्दी भाषा की महत्ता और हमारा संकल्प

- देशना सचान
एम.टैक. (सी.एस.ई)

"श्याम सुरभि पय विसद, गुनाद कराहाई सब पान।
गिरा ग्राम्य सियराम जस, गावाही सुनहिं सुजान।"

वेद, पुराण, शास्त्र भारतीय मूल की भाषाओं में होते हुए भी जनजीवन तक पूर्णत: उतर नहीं सके, इसलिए गोस्वामी तुलसीदास ने अंतर्मन की प्रेरणा से एक ऐसा प्रयास किया जिसे सुदूर ग्रामीण अंचलों से लेकर प्रबुद्ध वर्ग तक हिन्दी भाषा के माध्यम से एक सूत्र में आबद्ध कर दिया।

हिन्दी भाषा के माध्यम से हम अपने अंत:करण की भावनाओं को बिना किसी शारीरिक भाव भंगिमा से व्यक्त कर सकते हैं, जिसका प्रभाव संवाद प्राप्त करने वाले पर हूबहू होता है। इसकी शब्दावली में प्रत्येक बात को वर्णित करने की क्षमता है। ऐसा अन्य भाषाओं में नहीं है।

हमारे संविधान में हिन्दी भाषा के प्रयोग पर तो बल दिया गया है किंतु इस को अपनाने के लिए हमारी मानसिकता सैकड़ों वर्षों की गुलामी के कारण दूषित हो गई है और हम दूसरों की नकल करने के अभ्यस्त हो गए हैं। हम अपनी भाषा हिन्दी में भाव व्यक्त करने पर अपने व्यक्तित्व को बौना समझते हैं। यह स्थिति इतने वर्षों की स्वतंत्रता के बाद भी अगर हमारे मन व मस्तिष्क को प्रभावित करती है तो निश्चित रूप से हम अभी गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए हैं, जिससे हमारा अपेक्षित विकास भी अवरुद्ध है।

यदि हम अतीत पर दृष्टि डालें, 15वीं और 16वीं सदी से ही महापुरुषों के हृदय में एक तूफान उठता है जिसने अरबी और फ्रांसीसी विदेशी भाषाओं से बढ़कर हिन्दी भाषा को प्रभावित किया था। यदि हम साहित्यक क्षेत्र में दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि जयशंकर प्रसाद, प्रताप नारायण मिश्रा, भारतेंदु हरिश्चंद्र, मैथिली शरण गुप्त ने अपना सारा जीवन हिन्दी भाषा की सर्वग्रह्यता में अर्पण कर दिया। लेकिन खेद है कि आज हम अपने ही देश में अपनी ही भाषा को अपमानित कर रहे हैं तथा उसे महत्व नहीं दे रहे हैं।

आइए, आज हम संकल्प लें कि हिन्दी भाषा रूपी नौका को सही दिशा व एक उच्च स्थान प्रदान करेंगे। इसका उत्तरोत्तर विकास हो। हिंदी का प्रयोग करने के प्रति हमारे में हीन भावना के स्थान पर गौरव एवं स्वाभिमान की भावना जागृत हो, एक ऐसी प्रेरणा सोच जागृत करें तभी हिन्दी की सर्वग्रह्यता प्रतिष्ठित हो सकेगी और इसे इसका वह स्थान मिल सकेगा जिसकी यह वास्तव में अधिकारिणी है।

♦♦♦

आवाजाही के साधन व पर्यावरण

- चन्द्र मोहन
परियोजना सहायक

आज की तेज व भाग-दौड़ भरी जिंदगी में आवाजाही और वस्तुओं को ढोने वाले वाहनों का बहुत महत्व है। कार, बस, स्कूटर, ऑटो, ट्रक, मोटर साइकिल, ट्रेन, हवाई जहाज और समुंदरी जहाज आदि इसके मुख्य साधन हैं। मनुष्य इन वाहनों का उपयोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए करता है। इन वाहनों के माध्यम से कोई भी व्यक्ति कुछ ही घंटों में लंबी दूरी की यात्रा पूरी कर सकता है। इसके साथ ही माल व वस्तुओं को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने में इन वाहनों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार इन सभी कारकों के कारण आवाजाही के इन साधनों का अपना महत्व है। लेकिन इन वाहनों को चलाने के लिए मुख्य तौर पर जिस ऊर्जा की ज़रूरत पड़ती है वे हैं - डीजल और पेट्रोल।

आजकल अधिकांश वाहनों में डीजल और पेट्रोल का उपयोग होता है। ऊर्जा के यह स्रोत बहुत अधिक प्रदूषण का कारण बनते हैं। हम सभी जानते हैं कि सड़कों पर वाहन कैसे काले धुएं का उत्सर्जन करते हैं। इससे हमारा पर्यावरण तो प्रदूषित होता ही है बल्कि मानव के स्वास्थ्य पर भी इसका हानिकारक प्रभाव पड़ता है। इस धुएं में बड़ी मात्रा में कार्बन भी होता है जो हमारी सांस के साथ शरीर में प्रवेश करता है और गंभीर बीमारियों का कारण बनता है। दरअसल डीजल और पेट्रोल के जलने पर, निकलने वाले धुएं में बड़ी मात्रा में कार्बन होता है। जब हम सांस लेते हैं, तो यह जहरीला धुआं हमारे फेफड़ों तक पहुंच जाता है, जिससे फेफड़ों को नुकसान हो सकता है। इसलिए डीजल और पेट्रोल के बढ़ते उपयोग से लोगों के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है। खास तौर पर यह बच्चों और बुजुर्गों के लिए बहुत खतरनाक साबित हो रहा है। इसलिए डीजल और पेट्रोल से होने वाले प्रदूषण से बचने या इसकी खपत को कम करने के लिए हमें जल्द ही गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रदूषण के दुष्प्रभावों से बचा जा सके। इस मुद्दे से संबंधित अनेक रिपोर्टें भी सामने आई हैं, जिनमें डीजल और पेट्रोल के उपयोग से पैदा होने वाले खतरों के बारे में चेतावनी दी गई है और केंद्र व राज्यों सरकारों से तत्काल कार्रवाई करने का आग्रह किया गया है। ऐसी स्थिति पर नियंत्रण पाने के लिए जहां सरकारों की मुख्य भूमिका है, वहीं हमें भी इसके बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है। यदि हम स्वयं इन समस्याओं से अवगत हो जाते हैं, तो यह कोई बड़ी बात नहीं है कि हम इस समस्या से जल्द ही छुटकारा पा लें। लेकिन इस संबंधी किसी एक व्यक्ति द्वारा किया गया प्रयास 'ऊंट के मुंह में जीरा' देने के बराबर होगा। मुख्य बात यह है कि हम सभी को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एकजुट होकर काम करना पड़ेगा। हमारा

लक्ष्य बहुत स्पष्ट है - डीजल और पेट्रोल के उपयोग को कम करके पर्यावरण संकट को दूर करना और स्वस्थ जीवन जीना। एक सामाजिक प्राणी के रूप में यह हमारी ज़िम्मेदारी भी है कि हम प्रकृति की सुंदरता को खराब न करें और अगली पीढ़ी के भविष्य के लिए कांटे न बोएं। इसलिए हम सभी को वाहनों में उपयोग किए जा रहे ऊर्जा के साधनों के विकल्प पर विचार करने के साथ-साथ अन्य स्रोतों के बारे में भी चर्चा करनी चाहिए ताकि इस समस्या को हल करने की दिशा में कोई मूल्यवान बिंदु उभर सके। इस संदर्भ में हम कुछ और बिंदुओं पर विचार करेंगे, जिन्हें अपनाकर हम इस समस्या से काफी हद तक छुटकारा पा सकते हैं।

ई-रिक्शा और इलेक्ट्रिक वाहन - डीजल व पेट्रोल के धुएं से बचने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग किया जा सकता है। आज हम सड़कों पर ई-रिक्शा और बहुत सारे इलेक्ट्रिक वाहन देखते हैं। हमें आवाजाही के इन साधनों का उपयोग करना चाहिए। इनका एक और लाभ यह भी है कि यह वाहन कोई शोर नहीं करते। हमारी सलाह है कि सार्वजनिक परिवहन को पूरी तरह से नहीं तो इलेक्ट्रिक वाहनों का अधिकतम उपयोग करना चाहिए। राज्य सरकारों को इस संबंध में पहल करने की आवश्यकता है। हाल ही में, ऐसी खबरें आई हैं कि कई राज्य सरकारों ने सार्वजनिक परिवहन के लिए बड़ी संख्या में इलेक्ट्रिक बसों के ऑर्डर दिए हैं। साथ ही केंद्र सरकार को इस तरह की पहल को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष सब्सिडी प्रदान करनी चाहिए ताकि लोगों को निजी वाहनों के लिए इलेक्ट्रिक कार, स्कूटर आदि खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। इसके साथ ही पर्यावरण की दृष्टि से भी ई-रिक्शा का उपयोग बहुत महत्वपूर्ण है। ई-रिक्शा बैटरी से चलते हैं और यह बिलकुल भी धुएँ का उतसर्जन नहीं करते हैं। ई-रिक्शा यात्रियों की आवाजाही के लिए बहुत ही सस्ता और सुविधाजनक साधन है। ई-रिक्शा का डिज़ाइन भी ऐसा बनाया गया है कि यात्रियों को इसमें बैठना व उतरना काफी आसान होता है। आजकल बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन और मेट्रो स्टेशनों पर काफी तादाद में ई-रिकशा देखे जा सकते हैं।

सार्वजनिक परिवहन का उपयोग - सार्वजनिक परिवहन जिसे पब्लिक ट्रांसपोर्ट भी कहा जाता है, का उपयोग करने से न केवल पेट्रोल पर खर्च होने वाले हमारे पैसे की बच्चत होगी बल्कि सड़कों पर वाहनों की भीड़ भी कम हो जाएगी। बस, मेट्रो, रेलगाड़ी आदि सार्वजनिक परिवहन के बेहतर साधन हैं। इनका किराया तो कम होता ही है, साथ ही पेट्रोल से उत्पन्न होने वाले प्रदूषण को भी कम किया जा सकता है। आज देश के कई राज्यों के प्रमुख शहरों में मेट्रो सेवा शुरू हो गई है और लोग इसका लाभ उठा रहे हैं।

सीएनजी का उपयोग - सीएनजी ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। पेट्रोल और डीजल की तुलना में सीएनजी से बहुत कम प्रदूषण होता है। इसके इस्तेमाल से वाहनों से निकलने वाले कार्बन की मात्रा में काफी कमी आती है। यह पेट्रोल से सस्ता भी है, इसलिए लोग निजी वाहनों के लिए भी सीएनजी ईंधन का इस्तेमाल कर रहे हैं। लेकिन इस संबंधी चुनौतीपूर्ण बात यह है कि सीएनजी अभी तक संपूर्ण देश में उपलब्ध नहीं है। यहां तक कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में भी हम देखते हैं कि सीएनजी स्टेशनों पर ऑटो, कारों और बसों की लंबी कतारें लगी रहती हैं, इससे यात्रियों को असुविधा होती है। पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकारों को भी इसकी आपूर्ति के लिए पर्याप्त व्यवस्था करने की आवश्यकता है।

कार पूल - सड़कों पर प्रदूषण बढ़ने का कारण वाहनों की अधिक संख्या है। इसलिए हमें सड़कों पर वाहनों की संख्या कम करने की आवश्यकता है। आज हर कोई अपने निजी वाहन जैसे कार या स्कूटर आदि से ऑफिस जाता है। यदि एक जगह से तीन या चार लोग अपनी कारों को एक ही कार्यालय में ले जाते हैं, तो सड़कों पर वाहनों की संख्या निश्चित रूप से बढ़ जाएगी। इससे ट्रैफिक जाम तो होता ही है पर साथ ही निरंतर बढ़ता हुआ प्रदूषण भी एक समस्या बनती जा रही है। वाहनों से होने वाले प्रदूषण को कम करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम सभी कार पूल की आदत डालें। कार-पूल का मतलब है कि चार या पांच लोग एक ही कार में बैठ कर अपने दफतर या गंतव्य तक जाएं। इससे ईंधन पर खर्च होने वाले पैसे की बचत तो होगी ही बल्कि काले धुएं से भी निजात मिलेगी।

साइकिल का उपयोग - हमें कम दूरी की यात्रा करने के लिए साइकिल का उपयोग करना चाहिए। अक्सर ही हम देखते हैं कि कई लोग घर का छोटा-मोटा सामान आदि लाने के लिए भी कार या स्कूटर आदि लेकर जाते हैं। यदि बाज़ार ज्यादा दूर ना हो तो हमें साइकिल का उपयोग करना चाहिए। इससे न केवल भीड़भाड़ वाले इलाकों में लगने वाले जाम से मुक्ति मिलेगी बल्कि प्रदूषण पर भी काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। साइकिल चलाने का एक और लाभ यह भी है कि इससे हमारा शरीर की चुस्त-दरुस्त और स्वस्थ रहता है।

इन उपायों का उपयोग करके हम डीजल और पेट्रोल की खपत को कम कर सकते हैं और इसका हमारे पर्यावरण पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा। वाहनों से निकलने वाले धुएँ को कम करके हम वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने में सक्षम होंगे। इससे न केवल हमारे पैसों की बचत होगी बल्कि हमारा शरीर भी स्वस्थ रहेगा।

♦♦♦

सौभाग्य योजनाः विशेषताएं, लाभ और चुनौतियां

- ओम प्रकाश शर्मा
हिन्दी परामर्शकार

देश के दूर-दराज के गांवों सहित प्रत्येक घर में सहज बिजली उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 25 सितम्बर 2017 को "प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना" का शुभारंभ किया गया है, जिसे "सौभाग्य योजना" के नाम से भी जाना जाता है। इस योजना का उद्देश्य देश में सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण हासिल करना है।

सौभाग्य योजना की मुख्य विशेषताएं

उद्देश्यः सौभाग्य योजना का उद्देश्य देश के ग्रामीण और शहरी इलाकों में शेष सभी गैर-विद्युतीकृत परिवारों तक बिजली कनेक्शन के माध्यम से बिजली सुविधा उपलबध करना है। यह उद्देश्य अगले दो वर्षों के भीतर प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जिसके लिए 16,320 करोड़ रुपए व्यय किए जाएंगे।

लाभार्थीः गरीब परिवारों को इस योजना के माध्यम से निःशुल्क बिजली कनेक्शन प्रदान किया जाएगा, जबकि अन्य परिवारों को मात्र 500 रुपए के भुगतान पर बिजली कनेक्शन प्रदान किए जाएंगे। इस राशि को बिजली बिल के साथ कुल 10 जिलों में पावर डिपार्टमेंट द्वारा वसूला जाएगा। लाभार्थी परिवारों को बिजली कनेक्शन के अंतर्गत एक सर्विस केबल, बिजली मीटर लगाने की सुविधा, एल.ई.डी. बल्ब के साथ एक लाइट प्वाइंट के लिए तार और मोबाइल चार्जिंग प्वाइंट आदि की सुविधा दी जाएगी। दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में स्थित घरों के लिए 200 से 300 वाट के सौर ऊर्जा पैक और 5 एल.ई.डी. लाइट सहित बैटरी बैक, एक डी.सी. फैन, डी.सी. पावर पल्ग तथा मरम्मत एवं रख-रखाव की सुविधा 5 वर्ष के लिए उपलब्ध कराई जाएगी।

सौभाग्य योजना के लाभ

इस योजना से उपभोक्ताओं को निम्नलिखित तरीके से लाभ होगाः

1. लाइट के लिए मिट्टी के तेल के इस्तेमाल के बजाए बिजली का विकल्प उपलब्ध होगा। जिसके परिणामस्वरूप आंतरिक प्रदूषण में कमी होगी, जिससे लोगों को स्वास्थ्य संबंधी खतरों से बचाया जा सकेगा।
2. हर घर में बिजली की पहुंच से देश के सभी भागों में कुशल और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएं स्थापित करने में मदद मिलेगी।
3. सूर्यास्त के पश्चात लाइट की सुविधा होने से महिलाओं की व्यक्तिगत सुरक्षा की भावना में भी बढ़ोतरी होगी। यही नहीं इससे सूर्यास्त के बाद भी कुछ सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों को जारी रखने में सहायता मिलेगी।
4. बिजली की उपलब्धता से शिक्षा के सभी क्षेत्रों का विकास होगा, रात में लाईट की व्यवस्था से रात को देर तक पढ़ाई करने की सुविधा से बच्चों के कैरियर विकास की संभावना भी बढ़ेगी।
5. लाईट की व्यवस्था हो जाने से वैकल्पिक रूप से उपयोग किए जाने वाले केरोसीन पर वार्षिक सब्सिडी कम हो जाएगी और पेट्रोलियम उत्पादों का आयात कम करने में सहायता भी मिलेगी।
6. प्रत्येक घर में बिजली, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट, मोबाइल जैसे सभी संचार की सुविधा मिल सकेगी जिससे हर प्रकार की महत्वपूर्ण जानकारी हासिल करना सुगम हो जाएगा।
7. किसान भाई नए और बेहतर कृषि तकनीक, कृषि मशीनरी, गुणवत्ता वाले बीज के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी, किसान और युवक कृषि आधारित लघु उद्योगों की स्थापना करने की संभावनाएं लगा सकते हैं।
8. योजना के कार्यान्वयन के फलस्वरूप घर के विद्युतीकरण के कार्यो के निष्पादन के लिए अर्ध कुशल/कुशल श्रमशक्ति की आवश्यकता से रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।

इस योजना के कार्यान्वयन में चुनौतियां

सौभाग्य योजना के सफल कार्यान्वयन में निम्नलिखित चुनौतियां शामिल हैं:-

वर्तमान में डिस्कॉम पर एक हजार करोड़ रुपए का कर्ज का भारी बोझ है। यद्यपि उज्जवल डिस्काम आवास योजना (यू.डी.ए.) से डिस्कॉम के वित्तीय स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन उनके लिए निर्धारित दो वर्ष की अवधि में सौभाग्य योजना को लागू करना एक बड़ी चुनौती है। इस योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए 20 प्रतिशत से अधिक के ट्रांसमिशन और वितरण घाटे को कम करने की आवश्यकता है। यही नहीं इस योजना के सफल कार्यान्वयन के

लिए ऊर्जा क्षेत्र में निचले स्तर के अधिकारियों के भ्रष्टाचार और उदासीनता को कम किया जाना चाहिए। इस संबंध में योजना के कार्यान्वयन में ग्राम सभाओं की भागीदारी एक स्वागत योग्य कदम है।

निष्कर्षः बिजली की पहुंच निश्चित रूप से दैनिक घरेलू कार्यों और मानव विकास के सभी पहलुओ में लोगो के जीवन की गुणवत्ता पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। सौभाग्य योजना एक महत्वपूर्ण पहल है, क्योंकि इसका सीधे-सीधे संबंध मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे: रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि के निर्माण, ऊर्जा सुरक्षा को प्राप्त करने और दूरदराज एवं दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले लोगो के जीवन में सुधार लाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

♦♦♦

हिन्दी को अपनाने का फैसला केवल हिन्दी वालों ने ही नहीं किया। हिन्दी की आवाज पहले अहिन्दी प्रान्तों से उठी। स्वामी दयानंद, महात्मा गाँधी या बंगाल के नेता हिन्दी भाषी नहीं थे। हिन्दी हमारी आजादी के आंदोलन का एक कार्यक्रम बनी।

\- अटल बिहारी वाजपेयी

कोरोना वायरस

- नितेश जादोन
प्रशासन प्रभाग

कोरोना वायरस का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है, जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को इससे पूर्व पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण सबसे पहले दिसम्बर 2019 में चीन के वुहान नामक शहर में हुआ था। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार तेज बुखार, सूखी खांसी, सांस लेने में कठिनाई होना, इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं। चिकित्सा विज्ञान भी अभी तक इस वायरस पर नियंत्रण करने के लिए कोई इंजेक्शन या टीका बनाने में सफल नहीं हो पाया है, हालांकि विभिन्न देशों में इसके लिए निरंतर प्रयास जारी हैं।

इस वायरस के लक्षण फ्लू से मिलते-जुलते हैं। इसके संक्रमण के फलस्वरूप तेज बुखार, जुकाम, सांस लेने में कठिनाई, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्या उत्पन्न होती है। यह वायरस संक्रमित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल जाता है इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। कोरोना प्राण घातक भी हो सकता है, विशेष तौर पर अधिक आयु के लोग जिन्हें पहले से अस्थमा, डायबिटीज और हृदय रोग की बीमारी है।

स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इन दिशा-निर्देशों के अनुसार चेहरे पर मास्क पहनना, हाथों को बार-बार 20 सेकेण्ड तक साबुन से धोते रहना चाहिए। अल्कोहल आधारित हैंड सनेटाइजर का प्रयोग करना चाहिए। खांसते और छींकते समय नाक और मुंह रूमाल या टिश्यू पेपर से ढककर रखें। जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें, अण्डे और मांस के सेवन से बचें।

कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने सात आसान स्टेप्स/तरीके बताएं हैं, जिनकी सहायता से कोरोना वायरस को फैलने से रोका जा सकता है और स्वयं भी इससे संक्रमित होने से बच सकते हैं :-

1. बार-बार अपने हाथों को साबुन या हैंडवास से धोते रहना चाहिए।
2. अपनी आंख, नाक और मुंह को छुने से बचें।
3. खांसते या छीकते समय रूमाल या टिशू पेपर या अपनी कुहनी से अपने मुंह और नाक को ढक लें।

4. भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर जाने से बचें और जिस व्यक्ति को बुखार या खांसी हो उससे दूरी बनाए रखें।
5. यदि आप अस्वस्थ महसूस करें तो घर पर ही रहें।
6. यदि आपको बुखार, खांसी, सांस लेने में कठिनाई महसूस हो तो तुरंत चिकित्सा सहायता के लिए डॉक्टर से संपर्क करें।
7. कोरोना वायरस के बारे में विश्वस्थ सूत्रों से जानकारी प्राप्त करें।

कोरोना वायरस का अभी कोई सटीक उपचार उपलब्ध नहीं है, इसलिए पूरी सावधानी बरतें, चूंकि सर्तक रहना और निर्धारित प्रोटोकॉल का पालन करने ही इससे बचा जा सकता है। घर पर रहें सुरक्षित रहे। कोरोना वायरस भारत सहित विश्व के 192 से अधिक देशों में फैल चुका है और हमारे देश में इससे अब तक एक लाख से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम विश्व स्वास्थय संगठन द्वारा जारी प्रोटोकॉल का पालन सुनिश्चित करें। क्योंकि कहावत भी है “जान है तो जहान है।“

♦♦♦

कोरोना के इस दौर में, मचा दुनिया में कोहराम।
दो गज दूरी मुंह को ढक कर, बच जाएगी जान।।

जाति प्रथा और राजनीति

- ऋतेश द्विवेदी
परियोजना सहायक

कहते हैं कि भारत में जातिप्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है पर क्या आप जानते हैं कि जिसे तथाकथित इतिहासकारों और राजनीतिज्ञ लोगों ने जातिप्रथा कहा है। हक़ीक़त में वो एक व्यवसाय वर्ग था जिसे बाद में जाति वर्ग कहा जाने लगा। जिसके पास ज्ञान था और जो उस ज्ञान को बांटता था वो ब्राह्मण था। परन्तु सच्चाई ये नहीं है, सच्चाई ये है कि जिसे ब्रह्म का ज्ञान वो ब्राह्मण है और जिसे किसी भी एक विद्या का सर्व ज्ञान है वो उस विद्या का पंडित, परन्तु आज राजनीति ने इन दोनों को एक कर दिया है।

इसी प्रकार जो युद्ध कला में निपुण थे वो क्षत्रिय और राजपूत हुआ करते थे, परन्तु आज ऐसा नहीं है और ये सब राजनीति के देन है। व्यवसाय वर्ग वैश्य लोग थे जो आज ना जाने कितने कुनबो में बंट गए हैं, जैसे कि ब्राह्मण और क्षत्रिय बंट गए हैं।

फिर आता है हमारा निम्न वर्ग जिसे आज दलित कहते हैं। पहले ये दलित शब्द नहीं था, ये शूद्र या हरिजन थे, क्योंकि इनका काम साफ-सफाई करना था और सबसे ज्यादा अत्याचार इसी वर्ग के साथ हुआ वो भी सतयुग, त्रेता या द्वापर युग में नहीं, बल्कि कलियुग में हुआ है। वो भी तब जब कलियुग का उतरार्द्ध प्रारंभ हुआ अर्थात् भारत में तत्कालीन पड़ोसी राज्यों के आक्रमण शुरू हो गए थे। सनातन संस्कृति को मानने वालों की संख्या काम होने लगी थी।

मुगलों, मंगोलों और फिर अंग्रेजों के काल में इन पर जुल्म हुआ जिसमें कहीं ना कहीं उच्च वर्ग (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) का भी योगदान था क्योंकि इन्हें अपना मान दिखाना था, पर ये भूल चुके थे कि इनका मान इनके ही बल पर था और इसी का फायदा अंग्रेजों ने उठाया। देश गुलाम हुआ फिर आज़ाद हुआ और फिर प्रारंभ हुई जातिगत राजनीति। जिसकी कहीं न कहीं शुरुआत बाबा साहेब ने की, क्योंकि मेरा ये मानना है कि उन्होंने जो आरक्षण दिया वो जातिगत दिया जो कि मेरे मतानुसार गलत है। हालांकि ये उस समय काल के हिसाब से ठीक था, क्योंकि उस समय ये वर्ग ही सब से अधिक पिछड़ा था परन्तु उन्हें क्या पता था कि उनका ये कदम भारत के भविष्य में बट्टा लगा देगा। उन्हें अपनी शंका पर पूर्ण विश्वास था। शायद इसलिए उन्होंने इसकी समीक्षा का भी प्रावधान किया था। परन्तु राजनीति ने ऐसा काम किया कि उनका ये महान कार्य आज मुझे गर्त में जाता दिख रहा है। क्योंकि आज हमारा समाज

फिर उसी राह पर चल पड़ा जिसमें पहले चला था और एक वर्ग विशेष का दोहन होने लगा है। क्योंकि वो अब सिर्फ वोटबैंक का हिस्सा रह गए हैं। उनके लिए कोई आयोग या योजना नहीं बनाई जा रही हैं। ऐसे कानून बन रहे है कि आपस में इनमें और दूरियां बनाई जा सकें, ताकि राजनीति कि रोटी सेक सके।

अब मेरा ये मानना है कि देश में सिर्फ एक ही आरक्षित वर्ग हो और उसका मापदंड आय होना चाहिए न कि जाति क्योंकि जो शोषित थे वो अब आगे आ चुके हैं और उनमें भी जो अभी भी आर्थिक रूप से पिछड़े हैं, उनमें भी यही मापदंड लगेगा तब वह भी आगे आ सकेंगे और तभी ये राजनीति से प्रेरित जातिप्रथा भारत से खत्म होगी और भारत के विकास का मार्ग खुलेगा क्योंकि तब इन नेताओं के पास दलित, ब्राह्मण और मुस्लिम कार्ड नहीं होगा फिर इन्हें उस गरीब वर्ग के लिए ही काम करना पड़ेगा, जिसमें ये सब आते हैं और फिर विकास कि गंगा भारत में बहेगी। इसके बिना ये असंभव है क्योंकि हमें इन लोगों ने बाँट रखा है, वर्गों और जातियों में ताकि इनकी दुकान निरंतर चलती रहे।

♦♦♦

अगर देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो, मेरा यह मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य यह कार्य कर सकते हैं- पिता, माता और गुरु।

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

लॉकडाउन

- गौरव
डी.डी.पी.एम.

लॉकडाउन अर्थात तालाबंदी। इसके तहत सभी को अपने-अपने घरों में रहने की सलाह दी गई है। जिसका सरकार की तरफ से कड़ाई से पालन भी करवाया जा रहा है। यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि कोरोना वायरस नामक महामारी मानव जाति के इतिहास में पहली बार आई है। लॉकडाउन एक आपातकालीन व्यवस्था है, जो किसी आपदा या महामारी के समय लागू की जाती है। लॉकडाउन के समय कोई भी व्यक्ति अनावश्यक कार्य के लिए सड़कों पर नहीं निकल सकता। कोरोना वायरस से लड़ने के लिए अब पूरा देश अपने-अपने घरों में कैद हो गया है।

इस महामारी के प्रकोप से लाखों लोग अपनी जान गवां चुके हैं और इससे बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है और वह है- सोशल डिस्टेंसिंग यानि की सामाजिक दूरी। यह संक्रमण एक से दूसरे इंसान तक बहुत तेजी से फैलता है। जिसके कारण भारत सरकार ने लॉकडाउन को ही इससे बचने के लिए आवश्यक माना है।

लॉकडाउन के फायदे

लॉकडाउन के दौरान बच्चों को अपने माता-पिता के साथ समय बिताने का मौका मिल रहा है, वहीं जो लोख खाना बनाने के शौकीन हैं, वो यूट्यूब के माध्यम से खाना बनाना भी सीख रहे हैं। पुराने सीरियलों जैसे रामायण, महाभारत आदि का दौर वापस आ गया है। बच्चों के साथ वीडियो गेम्स, कैरम जैसे गृहखेलों का बड़ों ने भी आनंद लिया। विद्यालयों में छुट्टी होने के कारण घर बैठकर शिक्षकों ने ऑनलाइन क्लासेज का सहारा लिया ताकि विद्यार्थियों की शिक्षा में कोई रूकावट न आए। लॉकडाउन के समय लोग अपनी दबी इच्छाओं को पूरा कर रहे हैं। म्यूजिक सीख रहे हैं, पेंटिंग सीख रहे हैं, डांस के शौकीन डांस सीख रहे हैं। लॉकडाउन के दौरान प्रदूषण में काफी कमी हुई है। चिड़ियों की चहचहाहट फिर से सुनने को मिल रही है। नदियों का जल स्वच्छता की ओर अग्रसर हो रहा है।

लॉकडाउन के नुकसानः

अगर लॉकडाउन का सबसे ज्यादा नुकसान किसी को हुआ है तो वह है मजूदर, जो अपने परिवार का पेट पालने के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं।

लॉकडाउन की वजह से देश की अर्थव्यवस्था को बहुत नुकसान हुआ है। लोगों की नौकरियां चली गई हैं, जिससे बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो गई है। कोरोना से संबंधित खबरें लोगों को मानसिक रुप से परेशान कर रही हैं, जिससे कई लोग डिप्रेशन जैसी समस्या से भी जूझ रहे हैं।

उपसंहार

लॉकडाउन के दौरान हमारा काम सिर्फ इतना है कि हमें लॉकडाउन के नियमों का पालन पूरी ईमानदारी से करना है क्योंकि सामाजिक दूरी ही कोरोना के रोकने का एकमात्र विकल्प है। सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों का पूरी ईमानदारी के साथ पालन करना ही हमारा कर्तव्य है, तभी इस महामारी को खत्म किया जा सकता है।

सर्तक रहें, सुरक्षित रहें,
कोरोना वायरस से सावधान रहें
क्योंकि सावधानी ही बचाव है।

♦♦♦

लोग अपने अधिकारों को तो याद रखते हैं, परन्तु कर्तव्यों को भूल जाते हैं।

- इंदिरा गाँधी

टेंशन दूर करने के तरीके

- अमिय मोहंती
परियोजना अभियंता

ज़िन्दगी में टेंशन आनी ही आनी है, कभी ये कुछ घंटों के लिए आती है तो कभी ये महीनों तक हमारे पीछे लगी रहती है। टेंशन को कम करने के निम्नलिखित कुछ तरीके हैं, जो बहुत फायेदमंद है:-

1) अपनी टेंशन का कारण किसी करीबी से शेयर करें

किसी ऐसे व्यक्ति से जो आपके साथ empathize कर सके, बस इतना ध्यान रखिये की वह व्यक्ति भरोसेमंद हो, जिसपर आप आँख मूँद कर भरोसा कर सकते हों। जब आप ऐसा करेंगे तो आपका मन हल्का होगा और सामने वाला आपके लिए उतना ही चिंतित है तो वो भी आपको टेंशन में राहत देने में कुछ मदद कर सकता है, और आप मनोविज्ञानिक (psychologically) तौर पर बेहतर महसूस करेंगे कि अब आप अकेले नहीं है, कोई है जो आपकी परेशानी को समझता है। मगर इस बात का भी ध्यान रखिए कि आप किसी ऐसे व्यक्ति से शेयर मत कीजिए जो आप की बात का आपके पीछे मज़ाक उड़ाए।

2) ऐसे लोगों से बात करें जिससे बात करने में खुशी मिलती हो

हमारी जिंदगी में कई लोग होते हैं जिनसे हमारे बहुत अच्छे रिश्ते होते हैं और हम उन्हें बहुत मानते हैं। लेकिन मैं जिन लोगो से बात करने की बात कर रहा हूँ जो भले ही आपके favorite list में आते हों या नहीं पर आपको उनसे बात करने में मजा आता हो, जिनके साथ आप खिलखिला कर हँस सकते हों। किस्मत से मेरे पास ऐसे कई मित्र हैं... मैंने झट से ऐसे ही एक दोस्त को फोन किया ओर खूब जम के हँसा। मैंने उनसे अपनी समस्या नहीं discuss की, बस इधर उधर की हँसी मजाक की बातें की, ज़ब आप हँसते हैं तो आपकी body stress hormones को कम कर देती है, जिससे टेंशन कम हो जाती है।

3) खुश रहने के बारे में पढ़ें

आप ऐसे कई लेख पढ़ सकते हैं जो आपको खुश रहने के बारे में अच्छी जानकारी दे सकते हैं। आप आध्यात्मिक लेख, quotes भी पढ़ कर अपनी टेंशन कम कर सकते हैं। दरअसल, पढ़ना हमारे विचारों को बदलता है और सारा खेल इन्हीं विचारों का ही तो है !!

4) ये समझें कि आप जितना tense होंगे आपके जीवन में उतनी ही कठिनाइयाँ आयेंगी

Law of Attraction हर जगह काम करता है इसलिए हम जितना अधिक दुखी रहते हैं, दुख के बारे में सोचते हैं उतना ही अधिक ये हमारे वास्तविक वन में दिखाई देता है। अनायास ही अपने विचारों को विपरीत दिशा मे ले जाने की कोशिश करें ओर जल्द ही आपको इसका फायदा भी मिलेगा।

5) भगवान से अकेले में बात करें

अगर आप नास्तिक हैं तो बात अलग है, परन्तु अगर आप भगवान को मानते हैं तो उनसे अकेले में बात करें। आप किसी शान्त जगह चले जाएँ और भगवान ने आपको जो कुछ दिया है उसके लिए धन्यवाद करें। आप इस बात को समझें कि दुनिया में करोड़ों लोग हैं जो आपसे कहीं बदतर स्थिति में हैं पर ईश्वर की कृपा से आपकी स्थिति उनसे बहुत अच्छी है और उससे भी बड़ी बात कि भगवान ने आपको वो सब कुछ दिया है जिससे आप अपनी जिन्दगी को और भी अच्छी बना सकते हैं।

साईं बाबा का कहना भी है- "अगर मेरा भक्त गिरने वाला होता है तो मैं अपने हाथ बढ़ा कर उसे सहारा देता हूँ।"

विशेषज्ञयों द्वारा संसुतित और भी चीजों को करने की कोशिश करनी चाहिए, जैसे कि एक अच्छी नींद लेना, ध्यान करना, गहरी सांसें लेना, अपनी पसंद का संगीत सुनना, योग करना इत्यादि।

अगर आप ध्यान दें तो अक्सर हमारी जिंदगी में जो टेंशन आती है उसकी शुरुआत छोटी होती है, लेकिन हम खुद ही उसे अपने नकारात्मक विचारों से बढ़ाते जाते हैं और धीरे-धीरे वो बड़ा रूप लेने लगती है।

हमें इस बात को स्वीकार करना होगा कि हमारी टेंशन का मुख्य कारण बाह्य नहीं बल्कि आंतरिक होता है, और उसे नियंत्रित करना सिर्फ और सिर्फ हमारे हाथ में है, और यकीन मानिए हम अपने थोड़े से प्रयास से काफी हद तक तनाव मुक्त हो सकते हैं।

♦ ♦ ♦

माँ

- अनिल कुमार
सचिव, प्रशासन

माँ दुनिया की किसी भी भाषा का सबसे मुलायम, सबसे आत्मीय, सबसे खूबसूरत शब्द है। हमारा पहला प्यार माँ ही होती है। जीवन का सबसे पहला स्पर्श माँ का होता है। पहला चुम्बन माँ का, पहला आलिंगन माँ का, पहली गोद माँ की, इस अजनबी दुनिया में आँखे खोलने के बाद सुरक्षा, कोमलता, ममता और आत्मीयता का पहला एहसास माँ होती है। पहली भाषा माँ सिखाती है, पहला शब्द जो हम बोलते हैं, वह माँ है।

कहते हैं कि ईश्वर हर जगह मौजूद नहीं रह सकता, सो उसने हर घर में अपने जैसी एक माँ भेज दी। माँ की गोद से उतर जाने के बाद जीवन भर हम माँ की तलाश ही तो करते हैं - बहनों में, प्रेमिका में, पत्नी में, बेटियो में, कल्पनाओं में बनी स्त्री छवियों में, एक बेचैन और आधी-अधूरी तलाश, जो कभी पूरी नहीं होती। पूरी हो भी तो कैसे, माँ के जैसा कोई दूसरा होता भी तो नहीं।

आप सचमुच भाग्यशाली हैं, अगर आपको थामने, आपकी फ़िक्र करने और अपनी हर एक सांस में आपके लिए दुआ मांगने वाली माँ आपके आसपास मौजूद है। हमारे जैसे मातृहीन लोग माँ को खो देने के बाद ही यह समझ पाते हैं कि हमने वस्तुतः क्या खो दिया है-

तेरी आगोश से निकले तो उम्र भर भटके,
अब भी रोते हैं, मगर दर्द किसे होता है।

♦♦♦

सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा का आधार है।
- महात्मा गाँधी

पुरस्कार या दंड

- देशना सचान
एम.टैक. (सी.एस.ई)

यह कहानी एक ऐसे व्यक्ति की है जिसे अपनी ईमानदारी सच्चाई और खुद्दारी पर बेहद गर्व है। हमारी कहानी का मुख्य पात्र आज भी जीवित है जिसे लोग बाबूजी कह कर पुकारते हैं, कुछ उनका मजाक बनाने के लिए कुछ उन्हें संवाद ना देने के लिए, लोग उनकी और उनके आदर्शों की इज्जत बहुत करते हैं परंतु उन्हें अपनाने से परहेज करते हैं।

कहानी के प्रमुख पात्र बाबूजी, एक बेहद ईमानदार कर्मशील और सच्चे व्यक्ति हैं। उनसे मेरी पहली मुलाकात मेरे गांव में ही हुई थी। आज से करीब 10 साल पहले जब उनके तीसरे और सबसे छोटे बेटे श्याम की शादी थी।

मैंने देखा कि गांव के ही नहीं अपितु आस पास के कस्बे के लोग बड़े या छोटे सभी उनकी बहुत इज्जत करते थे। मेरी उम्र के बच्चों के लिए, उनके नाम को आदर्श मानकर अपने जीवन की शुरुआत करने की सलाह हर कोई देता था।

बाबूजी टेलीफोन विभाग में एक उच्च अधिकारी के पद पर आसीन थे। अपने गांव के सबसे योग्य विद्वान व्यक्ति माने जाते थे। उन्होंने अपने जीवन काल में कभी एक पैसे की भी रिश्वत नहीं ली थी।

उनका पूरा स्टाफ उनकी बहुत इज्जत करता था और पूरे विभाग में उनकी खुद्दारी मशहूर थी। लोग उनकी मिसाल देते हुए कहते थे कि "इस बारे में अपने आप को कभी किसी की एक प्याली चाय का भीगा नहीं होने दिया।"

लंबी चौड़ी कद काठी, आंखों पर बड़ा चश्मा, नीली पैंट और आसमानी रंग की शर्ट और पुराने जमाने की "हीरो" साइकिल, पैरों में हवाई चप्पल व जेबों में कुछ पैसे, कुछ कागज और बाजार का सबसे सस्ता पेन। कुछ ऐसे थे बाबू जी।

जहां उसका ऑफिस का चौकीदार भी महीने में कम से कम चार दफा अपने कपड़े बदलता होगा वहीं सही में 2 साल में सिर्फ एक ही जोड़ी कपड़े बदलते थे। ऐसा कह सकते हैं कि वह 2 साल में सिर्फ 1 जोड़ी कपड़े सिलवाते थे। चप्पल जब तक खींच कर स्वयं ही टूट ना जाए तब तक तो उसे यह इस्तेमाल करते रहते थे।

जबकि उनके जूनियर अधिकारी चार पहिया वाहनों में आते थे और उनका चौकीदार सुरेश भी दो पहिया मोटरसाइकिल में आया जाया करता था।

"5 लोगों के परिवार का खर्च उनकी तनख्वाह से चल जाता है" अपने विरोधियों से बस इतना ही कहते थे। परंतु वास्तविकता कुछ और ही थी, महीने के अंतिम दिनों में पति-पत्नी दोनों ही एक समय भोजन करके गुजारा करते थे, उनकी पत्नी ने कभी उनका विरोध नहीं किया, मगर बच्चों ने उनका विरोध करने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ी।

समय व्यतीत होता गया और समाज एवं सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन आया, जो लोग कल तक उनका आदर करते थे वे उनका विरोध करने लगे, बाबूजी शब्द में से अब धीरे धीरे "जी" का मतलब गायब होने लगा फिर कुछ ही सालों में "जी" शब्द गुमनाम हो गया। कल तक जो उन्हें इज्जत देते थे वो आज उनका मज़ाक बनाने लगे।

उनके तीनों लड़के सरकारी नौकरी पर लग गए और अपनी पसंद की शादी कर ली। पिता और मां तो आशीर्वाद देने के लिए ही आमंत्रित किए गए थे और जैसे-जैसे उनकी रिटायरमेंट का समय करीब आया वैसे वैसे उनका परिवार टूटता चला गया। पहले बड़ा लड़का घर छोड़ कर गया, फिर दूसरा और फिर सबसे छोटा बेटा भी उन्हें छोड़कर चला गया। उनकी पत्नी भी उन्हें छोड़कर अपने बड़े लड़के के साथ रहना पसंद करने लगी, परंतु बाबू जी ने अपने पिता द्वारा बनवाए गए पुराने मकान को नहीं छोड़ा और ना ही अपनी इमानदारी को।

उनके रिटायरमेंट के दिन राष्ट्रपति द्वारा भेजे गए चांदी के पदक और एक सर्टिफिकेट से उन्हें सम्मानित किया गया। इस सम्मान को पाकर वह बेहद खुश हुए और इसी अवसर पर उन्होंने अपने प्रोविडेंट फंड के पैसे से अपने लिए नया सूट और एक नई साइकिल खरीदी थी। पर उनकी इस पदक को मिलने की खुशी उनके परिवार को ही नहीं बल्कि पूरे गांव में सिर्फ उन्हीं को हुई थी।

आज रिटायर होने के उपरांत वे अपने टूटे-फूटे मकान में रहते हैं, पेंशन से गुजारा करते हैं और हर शाम चौपाल में बैठकर अपने जीवन और अपनी ईमानदारी के किस्से सुनाते हैं। जब कभी वह अपने आदर्शों, अपनी परेशानियों को, अपनी भावनाओं को व्यक्त करना चाहते हैं तो लोग उनका मजाक उड़ाते हैं।

"ऐसे चांदी के तगमें और होंगे तो फिर क्या उन्हें बिछाओगे" यह पंक्ति आज मेरे गांव का सबसे मशहूर और ज्वलंत मज़ाक है।

आज भी वह सुबह-सुबह उसी वेशभूषा में साइकिल पर सवार होकर गांव से करीब तीन-चार किलोमीटर दूर मंदिर में पूजा करने जाते हैं। आज जहां 60 साल की उम्र वाला मनुष्य चलने को भी तरस जाता है, या फिर पैदल चलने से कतराता है, वहां वह रोजाना स्वयं को और अपनी साइकिल को खींचते हैं।

आज गली मोहाले के बच्चे उन्हें ईमानदारी की मिसाल कह कर चिढ़ाते हैं। परंतु वह कभी किसी से कुछ नहीं कहते और ना ही उनके चेहरे के मौखिक भाव में कोई अंतर आता है।

मैं आज तक नहीं समझ नहीं पाया इतने लोगों के कहने, मजाक उड़ाने पर भी वह क्यों नहीं मान लेते कि उनके आदर्श सिर्फ किताबों में पढ़ने और पेपर में लिखने के लिए ही अच्छे लगते हैं। उन्हें वास्तविक जिंदगी में उनकी ईमानदारी एवं आदर्शों के लिए यह सब पुरस्कार मिला या फिर दंड, यह मैं आज तक समझ नहीं पाया हूँ। परंतु मैं ईश्वर से एक ही प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी मदद करे और उनके आदर्शों को सदैव जीवित बनाए रखे।

♦♦♦

निश्चय के बल से ही कल की प्राप्ति होती है।

- संत तुकाराम

लंबी रात

- अनिल कुमार
सचिव, प्रशासन

गौतम बुद्ध ने बहुत सरल उदाहरणों के जरिये बहुत गहरी बातें कही हैं। जैसे एक गाथा में वह कहते हैं : जागने वाले की रात लंबी होती है, थके हुए के लिए रास्ता लंबा होता है।

रात वही है, लेकिन जब हम गहरी नींद सोते हैं, तो रात छोटी मालूम होती है। हमे पता ही नहीं चलता कि कब गुजर गई। यदि कोई प्रियजन मरण शय्या पर हो, और हम उसके पास बैठे हों, तो रात कटती ही नहीं। हमारे मनोभावों पर निर्भर है रात का लंबा या छोटा होना। यह बात सिर्फ रात पर लागू नहीं, पूरी जिन्दगी पर लागू होती है। समय का नाप हमारे मन में है। समय का नाप सापेक्ष है। जब हम प्रसन्न होते हैं, तो समय जल्दी बीत जाता है। जब हम दुखी होते हैं, तो समय धीरे-धीरे रेंगता है। घड़ी की चाल वैसी ही है, किसी के सुख-दुःख से नहीं बदलती, लेकिन समय के प्रति हमारा बोध बदल जाता है।

दुनिया में जो आनंद से जीने का ढंग जानते हैं, उनकी जिन्दगी की यात्रा रोशनी से भरपूर होती है, और जिन्होंने दुःख से जीने की आदत बना ली है, उनकी जीवन यात्रा काली रात की तरह हो जाती है। आप अपने चारों तरफ जो अनुभव कर रहे हैं, वह आप पर निर्भर करता है। वस्तुतः आपने ही उसे निर्मित किया है। आपने जो जिन्दगी पाई है, वैसी जिंदगी पाने का आपने उपाय किया है- जाने या अनजाने में। जो माँगा था, जो चाहा था, वही मिला है। अगर आपको जिंदगी लंबी मालूम होती है, तो अवश्य आप दुखी होंगे। मन की अवस्था को बदलें, मन को अधिक हल्का बनाएं, बोझ को उतार फेंके और ध्यान को अपनी जिंदगी में शामिल कर लें। आप पाएंगे, समय न लंबा है न छोटा, समय तो बस है - आकाश की तरह।

♦♦♦

एक अप्रदर्शित नाटक

- संकल्प गर्ग
एम.सी.ए.

यह बात है साल 2017 की। हमने बड़े ही जोश में एक नई नाटक मंडली की स्थापना की थी। और सौभाग्य की बात यह थी कि हमारे पहले ही नाटक ने खूब तारीफ़ बटोरी और एक जश्न का मौहल पूरी मंडली में था। यूँ तो देखा जाए तो उस मंडली का निर्देशक मैं था, परंतु वास्तव में कुछ ऐसे व्यक्ति उस मंडली में मौजूद थे जिनका योगदान अतुलनीय था। पहले नाटक के बाद हम सभी अपने अगले नाटक को लेकर काफी उत्साहित थे। और दूसरे नाटक का मुद्दा “विद्या” चुना गया। हम सभी जोर-शोर से तैयारियो में लग गए। लेकिन हम अभी भी अपनी असल काबिलियत से अनिभिज्ञ थे।

जिंदगी हर बार आपके सामने नई परीक्षा लेकर आती है। इस बार के नाटक में कई ऐसे पात्र थे जिन्हें निभाना अत्यंत कठिन था। मसलन कड़कती धूप में एक अधमरे व्यक्ति का पात्र, उसके समक्ष बैठी उसकी धर्मपत्नी व उसकी पीड़ा को दर्शाना अथवा उनकी एक गूंगी बहरी बच्ची इत्यादि। और मैं एक निर्देशक के तौर पर बड़ी उलझन में था। क्या ये हमसे हो पायेगा? क्या हम इसको करने में समर्थ हैं? बस एक ही विश्वास था मन में कि ऐसे हालात में ही इंसान अपना सर्वश्रेष्ठ कार्य करने में सफल होता है।

इस बार मैंने निर्णय लिया कि हम उन कलाकारों को मौका देंगे जिन्हें पहले नाटक में हिस्सा लेने का ज्यादा मौका नही मिल पाया था। और आप शायद मेरी बात का विश्वास न करें, परंतु जिन दो मुख्य कलाकारों का चयन हुआ उन दोनों के असल नाम कलाकार के पात्र से पूर्णतः विपरीत हैं। यह विधि का विधान था या कुछ और मुझे आज तक समझ नहीं आया। कड़कती धूप में अधमरे व्यक्ति का किरदार निभाया “संदीप” ने जिसका अपने आप में अर्थ है “रोशनी”। और छाती पीटती उसकी पत्नी का किरदार निभाया “शीतल” ने। यदि मैं आज विचार करूं तो लगता है मानो उनके इस नाम के पीछे ये किरदार निभाना छुपा हो।

ख़ैर, चलिए मैं आपको नाटक के एक भाग का विश्लेषण देता हूँ। जमीन पे पड़ा अधमरा व्यक्ति जो अपने पूरे प्रयास में है कि न आंखे टीम-टिमाये और न ही वे हँसे। बराबर में बैठी है उसकी गूंगी बहरी बच्ची जो अपनी माँ का दर्द कम करना चाहती है, परंतु विवश है। और वही

है वो बेसहारा पत्नी जिसे अब कोई सहारा नज़र नही आता। फूट-फूट कर रो रही है और एक ही बात याद दिला रही है कि “इन्होंने मेरी एक बात न सुनी। कितनी बार कहा शराब का सेवन मत करो, मत करो। परंतु ये ना माने और आज यह हाल है।” अब मैं कहाँ जाऊं, क्या करूँ कुछ समझ नहीं आता। उसकी वाणी में वो दर्द चेहरे पर वो चिंता। मानो शीतलता को अंदर दबा के पात्र को, किरदार को अपने अंदर जन्म दिया हो उसने और बताना चाहती हो सारी दुनिया को कि इंसान रहे या न रहे किरदार हमेशा जिंदा रहता है। मानो कहना चाहती हो मैं ही हूँ वो अभागन जिसके पति आज मृत्यु शय्या पर पड़े हैं।

इस भाग को देखें वहाँ मौजूद सभी दर्शक मानो शीतल संदीप की कला का प्रदर्शन देख मन्त्र मुग्ध हो गए व सभी की आँखों से ऑसू झलक पड़े। उस दृश्य को याद कर आज भी मेरा मन भर आता है। और मैं बार-बार एक ही बात विचारने को विवश होता हूँ। ये कलाकार की जीत थी या उस पात्र की और उन सभी की जिन्होंने ऐसा पात्र का चयन किया। ख़ैर कुछ आगे बढ़ते हैं। आप सभी को लग रहा होगा कि इस नाटक के लिए हमें अनेकों सफलता के पुरस्कार से नवाज़ा गया होगा।

किन्तु यही तो विडम्बना है इस समाज की। जैसा आप सोचते हैं वैसा अक्सर नही होता। इतना सुंदर पात्र लेखन, इतनी सुंदर कलाकारी मानो सिर्फ उन चंद दर्शको के नसीब में थी। परिस्थिति व हालात कुछ इस प्रकार के बने कि यह नाटक एक “प्रदर्शित नाटक” के रूप में बस उस मंडली तक ही सीमित रह गया। बल्कि आज यह हाल है कि शायद उस मंडली के भी आधे लोग तो भूल चुके होंगे कि ऐसा भी कुछ हुआ था। और यही है इस समाज की सच्चाई। ऐसे हजारों छोटे-बड़े किस्से हमारे जीवन को छूकर निकल जाते हैं और हम गौर भी नही फ़रमाते। पर ऐसे छोटे-बड़े किस्सों में कुछ किस्से ऐसे भी होते हैं, जो हमें जीवन भर का पाठ पढ़ा देते हैं।

♦♦♦

कोरोना को हराना है

- ओम प्रकाश शर्मा
हिन्दी परामर्शकार

है समय का फेर यह सब दोस्तो,
समय बदलने की देर है बस दोस्तो।
फोन पर ही बात करो अब तुम,
अपने चाहने वालों से,
पास नहीं जाना दूर ही रहो तुम,
अपने चाहने वालों से।
आज दूरियां हैं तो कल नजदीक भी आना है,
यही संदेश हमें जन-जन तक पहुंचाना है,
कोरोना महामारी को हमें हर हाल में हराना है
आने वाला कल अपना सुनेहरा बनाना है।
सभी युद्धवीरों का हौसला बढ़ाना है,
पग-पग पर उनका साथ निभाना है,
हौसला सबका बुलंद हमें बनाना है,
अपने साथ-साथ दूसरों को भी बचाना है।
नमस्ते इंडिया को अपनाना,
भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाना है,
हरा सकता है न कोई हमें, न कभी हारेंगे हम,
सपूत हैं भारत माता के, अंचल इसका न मैला होने देंगे हम।
कुछ और दिन रहना है संभल के, मौत के इस सौदागर से,
अंधेरी रात भी हट जाएगी हिम्मत के उजियारे से,
साहस की नहीं है कमी भारत के जनमानस में,
आइए निभाएं फर्ज अपना, इस महामारी में।

♦♦♦

जिंदगी

-राजेन्द्र सिंह
परियोजना अधिकारी

दुनियां का हर सख्स ही बेताब सा रहता है,
जिंदगी को समझने का ख्वाब सा रहता है।
कभी लगता है जिंदगी धीमी बहुत है,
और कभी रफ्तार से भागे है जिंदगी।
किसी की जिंदगी दिन में सो जाती है,
किसी की रात में भी जागे है जिंदगी।
किसी के अगल बगल चलती है जिंदगी,
किसी के पीछे किसी के आगे है जिंदगी।
जितनी जिंदगियां उतने ही बखान यहाँ,
कोई खाया गया कोई खुश खाके जिंदगी।
अपनी अपनी शैलियाँ हैं जिंदगी गुजारने की,
कोई शांत हो के, कोई गाके काटता है जिंदगी।
कोई खुद मार देता है अपनी जिंदगी को,
किसी का क़त्ल कर देती है आके जिंदगी।
कोई बिन बताए त्याग देता है जिंदगी को,
किसी को त्याग जाती है बताके जिंदगी।
कोई सोचे जिंदगी कैसे पीछे छोड़ेगी मुझे,
जिंदगी कमजोर है कैसे तोड़ेगी मरोड़ेगी मुझे।
जिंदगी मर जाती है जहाँ मेरे निशान होते हैं,
जिंदगी अपंग है हम उसके भगवान होते हैं।
जो मेरी थी अब मेरे आसपास न रही जिंदगी,
खेलने कूदने में बीती वही थी सही जिंदगी।
होश नहीं था पर सबकी आँख के तारे थे,
शादी के बजाय अपनी मर्जी से कुंवारे थे।
जब सारी बस्ती से निहत्थे जीते थे हम,
दूध दही घी के बदले जाम पीते थे हम।
व जब बिना किताब के जाते पढ़ने हम,
शर्मिंदगी के बजाय लगते अकड़ने हम।

थप्पड़ खाके भी लगता भूखे नहीं सोएंगे,
माँ बाप सिर पर है कहीं जाके क्यों रोयेंगे।
    जिंदगी जानी जब बाबुल का साया नहीं रहा,
    मुंह में बोल आँख में अश्क बकाया नहीं रहा।
भटक रहा हूँ गाँव शहर कहीं तो मिलेगी,
सूखी हुई वो बगिया कभी तो खिलेगी।
    वो जिंदगी जब खिलखिलाया करते थे,
    महफ़िलों में खूब पिया-पिलाया करते थे।
बाबुल के रहते मानते जिंदगी आसान नहीं है,
अब जब भक्ति जागी तब भगवान नहीं है।
    माँ बाप ऐसा बेइंतिहा प्यार कर बैठते हैं,
    अपने ही बच्चों पर अत्याचार कर बैठते हैं।
जिंदगी मिले गहरे पानी में उतरने के बाद,
क्या जिंदगी है जो मिली बाबुल गुजरने के बाद।
    खुशनसीब है वो जिसे मिलती किसी बहाने से,
    अभागे की जिंदगी है बस आनेजाने और खाने से।
छोटी छोटी चीजों को समझना है जिंदगी,
सुख दुःख दोनों में हँसाना हँसना है जिंदगी।
    अपनों का नहीं विश्व का कल्याण है जिंदगी,
    अपनी कमाई से कुछ करना दान है जिंदगी।
क्यों कितना बोलना समझ का नाम जिंदगी,
विश्व कल्याण हेतु किया गया काम जिंदगी।
    महलों का सुख न झोपड़ी की व्यथा जिंदगी,
    पल में राजा से रंक बनने की कथा जिंदगी।
सोचने काटने वाले जिंदगी को दुआ कहते हैं,
जीने वाले इसे बंद कमरे का धुआं कहते हैं।
    भूले बिसरे आदमी के लिए मजा है जिंदगी,
    जीयें और समझें तो गुनाहों की सजा है जिंदगी।
कुछ जीवन को मस्ती और गृहस्थी मानते है,
जिंदगी दुर्लभ है वे बेवजह सस्ती मानते हैं।
    बल से पहले जमीन को हड़पना है जिंदगी,
    इस दुष्कर्म के लिए बाद में तड़पना है जिंदगी।

जिंदगी कड़वा विष है हर कोई पी नहीं सकता,
नासमझ काटता है समझदार जी नहीं सकता।

सोचो और काटो तो आकाश सी बड़ी है जिंदगी,
जियो तो हर पल मौत के आगे खड़ी है जिंदगी।

जो निभा न पाया माँ को दिया वचन है जिंदगी,
नम आँखों से पापा को ओड़ा कफ़न है जिंदगी।

मम्मी की गोद में बीता व बचपन है जिंदगी,
बात बात पर बाप से बंधता बंधन है जिंदगी।

गाँव की मिट्टी की अमिट सुगंध है जिंदगी,
सातों जन्म सुधारने का एक प्रबंध है जिंदगी।

जिंदगी बचपन है जो हँस खेल कट जाती है,
बाद में ख्वाब तो रहता है जिंदगी बट जाती है।

♦♦♦

अपने देश की आजादी की रक्षा करना केवल सैनिकों का काम नहीं, बल्कि ये पूरे देश का कर्तव्य है।

– लाल बहादुर शास्त्री

कवि नहीं हूँ मैं

- गौरव
डी.डी.पी.एम.

नज़र की स्याही से
ख्वाबों की इमारत बनाता हूँ
कभी सायों से डरता हूँ
कभी इन्हीं सायों में अपना
वजूद ढूंढता हूँ
पर कवि नहीं हूँ मैं।

भा जाए कोई चेहरा
अनजानी सी भीड़ में
तो कागज पर शब्दों से
इस धुंधले पड़े चेहरे को
खोजने की कोशिश करता हूँ
पर कवि नहीं हूँ मैं।

जो जग उठे सीने में
दुःख का सैलाब
या फिर होंठो की मुस्कुराहट
जाते ना बने
कुछ अस्थायी लम्हों को
पन्नों पर स्थिरता देनें की कोशिश करता हूँ
पर कवि नहीं हूँ मैं।

देर रात समय के एक कोने में
एक याद अंगड़ाई लेती है
इस पार कलम की स्याही
लहू की तरह बहने लगती है
जाने-अनजाने उन बीते पलों की फ़रियाद करता हूँ
पर कवि नहीं हूँ मैं।

कवि कविता कवियत्री
संसार के बनाए इन शब्दों में
खुद को ढालने की कोशिश करता हूँ
जहां सब हैं वहां मैं भी जाना चाहता हूँ
ना जाने किस पहर एक नया मोड़ ले लेता हूँ
और फिर एक बार बोझ पड़ता हूँ
कवि नहीं हूँ मैं।

♦♦♦

जीवन एक संघर्ष

-रामबिलास चौधरी
प्रशासन विभाग

संघर्ष की चक्की चलती है,
मेहनत का आटा पिसता है,
सफलता की रोटी पकती है,
और अपना सितारा चमकता है।

सहारों का रास्ता बुन कर फिर,
मन तेज तीव्रता से दौड़ता है,
अपने आप को निखारने के लिए,
रोशनी की किरण टटोलता है।

यहां आशा है, निराशा भी है,
परन्तु ये तो जीवन है,
यहां हर परिस्थिति को बस एक मुस्कुराहट,
से पार कर जाना है।

देखें तो हर लम्हे में खुशी है,
हर लम्हे में समस्या है,
जो जी लिया वो जिन्दगी है,
जो खो दिया वो केवल यादें हैं।

मंजिल हो प्यारी जिन्हे वो,
राहों में न कभी अटकता है,
भूल जाए जो लक्ष्य कभी,
वो सारा जीवन भटकता है।

मन में केवल एक ही,
प्रण धारण करना है,
लक्ष्य को पाने के लिए मुझे,
हर तट पर धैर्य धारण करना है।

न राजा न रंक यहां,
न स्वाभिमान न ईमान यहां,
केवल समय ही मूल्यवान यहां,
जिसके पीछे भागता मनुष्य सदा।

बैसाखियां छोड़ बहानों की,
जो हौसलों से ही चलता है
होता अलग वो दुनिया से
इतिहास वो ही रचता है।

कदम छोटे हैं तो कोई फर्क नहीं पड़ता,
बढ़ते रहे तो मंजिल नजदीक आती है,
खाक हो जाते हैं वो जो अपने हालातों को
मानते हैं किस्मत अपनी,
हौसलें बुलंद हों तो किस्मत बदल जाती है।

♦♦♦

इंतजार करने वालों को उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

एक बार फिर

-सक्षम पाण्डेय
एम.बी.ए. (आई.टी.)

एक बार फिर प्रकृति से अवरोध का नतीजा आया है,
एक विषाणु ने विश्व भर में हाहाकार मचाया है।
जीवन शैली में कुछ ऐसा परिवर्तन आया है,
मुख पर मास्क से श्वास लेना अनिवार्य करवाया है।।

एक बार फिर स्वच्छता को पूर्ण रूप से अपनाया है,
घर के साथ मोहल्ले में भी अभियान चलाया है।
जनता कर्फ्यू से लेकर लॉकडाउन में साथ निभाया है,
असामाजिक तत्वों को भी प्रेम भाव से समझाया है।।

एक बार फिर परिवार के साथ समय बिताया है,
घर के कामों में माँ का हाथ बटाया है।
वर्क फ्रॉम होम का खूब लाभ उठाया है,
वर्षों बाद मनपसंद खाना घर में खुद बनाया है।।

एक बार फिर योग में ध्यान लगाया है,
खुद की प्रतिरोधक क्षमता को बढाया है।
जग की कोई दवाई जब काम ना आई तो,
आयुर्वेद के काढ़े ने अपना कमाल दिखाया है।।

एक बार फिर प्रकृति के सामने सर झुकाया है,
अपनी त्रुटियों का माफी नामा छपवाया है।
शूरवीरों ने अपना बलिदान नहीं गंवाया है,
दो गज की दूरी का पाठ हमें सिखलाया है।।

♦♦♦

आप बीती

-ओम प्रकाश शर्मा
हिन्दी परामर्शकार

चुपके से आया कोई घर में मेरे,
ताला तोड़ा, कुण्डी उखाड़ी,
था कोई शातिर खिलाड़ी।

दिन दुपहर की है बात, समय था कोई खास,
जो कुछ लगा हाथ उसके, कर लिया उसने हाथ साफ,
कहने को है इज्जतदार, काम करे शर्मनाक,
ना आई शर्म, ना आई लाज,
खाने लगा कसमें हजार।

पर बयां कर सकता है कोई तब तक,
कानून के ठेकेदार साथ है जब तक,
कहते है भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं,
चोर अपना ही था, कोई गैर नहीं।

कुत्ता आया पुलिस आई, तमाशा हुआ खूब,
जब तक आंखों में था पानी, बहाया खूब,
पर जब तक दम में दम है,
जिसने किया है कसूर, उसे सजा मिलेगी जरूर।

♦♦♦

जिंदगी- एक सवाल

-संकल्प गर्ग
एस.सी.ए.

जो जिंदगी बिना समझे जीता है वो इसे आसानी से पार कर जाता है,
जो समझने बैठ जाये बस वही इसे चक्रव्यूह पाता है।
हर किसी की जिंदगी में ख़ुशी, गम, असफलता, सफलता हर तरीके का पल आता है,
और इंसान बस इसी में उलझ के रह जाता है।
जिंदगी क्या है अब समझने को दिल चाहता है।

थोड़ा ठहर जाओ तो सब आगे निकल जाते हैं,
भागते रहो तो जिंदगी जीना भूल जाते हैं,
सफलता का जुनून हो तो लोग पागल बतलाते हैं,
बिन मकसद जियो तो रिश्ते बिखर जाते हैं।
भागो या ठहरों अंत में मौत को सबने पाना है,
अब इन लोगो की राय से दूर अपनी जिंदगी का रास्ता ख़ुद बनाना है।
याद करे सब मरने के बाद भी कुछ ऐसा करने को दिल चाहता है,
जिंदगी क्या है अब समझने को दिल चाहता है।

किसी चीज़ को पाना असल मकसद नहीं है
उस राह से भी सीखना है कुछ जो असल में सिखाती नही हैं,
पर सवाल तो वही है कि सीख के जाना कहाँ है?
ये जो दिखा रही है जिंदगी इसको अपनाना कहां है?
यदि फल नहीं है तो इस क्रम का उपयोग कहां है?
इस जीवन के उद्देश्यों का बताये कोई स्त्रोत कहाँ है?
मिली हर एक परिस्थिति में इस जीवन की खो जाने को दिल चाहता है,
जिंदगी क्या है अब समझने को दिल चाहता है।

काश कि ऐसा होता कि आत्मा को
इस शरीर को कुछ क्षण छोड़ने का एक अवसर होता,
क्या है मृत्यु और उसके बाद कि कहानी ये जानने का मकसद पूर्ण होता,
फ़िर शायद इस दुविधा से परे, छल भरे लोगों की दुनिया से परे,
छोड़ इस दिमाग़ी जंग को शांत मन से बस कर्म होता,
और वो नासमझ जिसने कोशिश भी न की
उसका भी जीवन सम्पूर्ण होता।

जिंदगी क्या है अब समझने को दिल चाहता है।।

♦♦♦

पहचान

- नवीन चन्द्र
हिन्दी प्रकोष्ठ

काम करो ऐसा कि पहचान बन जाए,
हर कदम चलें ऐसे कि निशान बन जाए,
यह जिंदगी तो सब बिता देते हैं,
जिंदगी ऐसे जिएं कि मिसाल बन जाए।

लोग अगर जरूरत पड़ने पर ही तुम्हें याद करते हैं,
तो बुरा मत मानिए बल्कि गर्व कीजिए,
चूंकि मोमबत्ती की याद तभी आती है जब अंधेरा होता है।

किसी ने क्या खूब कहा है,
सांप अब बेरोजगार हो गए,
जब आदमी काटने लगे, तो जानवर क्या करें
जब तलवे आदमी चाटने लगे हैं,
कहीं चांदी के चमचे हैं,
तो कहीं चमचों की चांदी है।

छोटी-छोटी बातें दिल में रखने से,
बड़े-बड़े रिश्ते कमजोर हो जाते हैं,
कभी पीठ पीछे बात पता चले,
बात उन्हीं की होती है, जिनमें कोई बात होती है।

निंदा उसी की होती है जो जिंदा है,
मरने के बाद तो सिर्फ तारीफ होती है।

♦♦♦

लॉकडाउन की मधुशाला

- अनिल कुमार
सचिव, प्रशासन

कोई मांग रहा था देशी,
और कोई फॉरेन वाला।
वीर अनेकों टूट पड़े थे,
खुल चुकी थी मधुशाला।

शासन का आदेश हुआ था,
गदगद था ठेके वाला।
पहला ग्राहक देव रूप था,
अर्पित किया उसे माला।

भक्तों की लम्बी थी कतारें,
भेद मिटा गोरे काले का।
हिन्दू मुस्लिम साथ खड़े थे,
मेल कराती मधुशाला।

चालीस दिन की प्यास तेज थी,
देशी पर भी था ताला।
पहली बूँद के पाने भर से,
छलक उठा मय का प्याला।

गटक गया वो सारी बोतल,
तृप्त हुई उर की ज्वाला।
राग द्वेष सब भूल चुका था,
बाहर था अन्दर वाला।

हँस के उसने गर्व से बोला,
देख ले ऐ उपर वाले।
मंदिर मस्जिद बंद है तेरे,
खुली हुई है मधुशाला।

पैर बेचारे झूम रहे थे,
आगे था सीवर नाला।
जलधारा में लीन हो गया,
जैसे ही पग को डाला।

दौड़े भागे लोग उठाने,
नाक मुंह सब था काला।
अपने दीवाने की हालत,
देख रही थी मधुशाला।

♦ ♦ ♦

वृद्ध अवस्था - शोषण

- संकल्प गर्ग
एम.सी.ए.

समाज - एक ऐसी जगह है जिसके बिना किसी मनुष्य का जीवन सफलता की सीढ़ी नहीं चढ़ सकता। इसका निर्माण अनेकों युगों में अनेकों महापुरुष के बलिदान व परिश्रम से हुआ है। इसके निर्माण में हमारे माता-पिता, दादी-दादा व सभी पूर्वजों का महत्वपूर्ण योगदान है। आने वाली पीढ़ियों को जो समाज मिलेगा, उसमें हमारा योगदान भी महत्वपूर्ण होगा। इस समाज में सकारात्मक व नकरात्मक दोनों तरह के तत्व मौजूद हैं और दोनों ही हमारी जीवन प्रणाली के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

सामान्य तौर पर देखा गया है कि आज की पीढ़ी केवल उन्हीं विचारों को सकारात्मक मानती है जो उनके हक़ में हो। मसलन यदि कोई आपके विचारों से सहमति नही रखता तो या तो वह आपसे ईर्ष्या रखता है या उनकी सोच उतनी बड़ी नहीं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है भारतीय व पश्चिमी वेशभूषा में चलती जंग। और इसी विचारधारा के चलते आज हम अपने बड़ों का आदर व सम्मान करना भूलते जा रहे हैं। आलम यह है कि कुछ मन्दबुद्धि मनुष्य तो अपने ही माता-पिता के कथनों को रोक-टोक मानने लगे हैं, सामाजिक तत्वों पर तो क्या ही चर्चा करें। यह एक बहुत बड़ा कारण है कि आज समाज में वृद्ध-अवस्था शोषण बढ़ता जा रहा है।

वृद्ध-अवस्था शोषण के अनेक प्रकार हैं। जैसे की शारीरिक शोषण, बुनियादी जरूरतों का पूरा न होना, शारीरिक व मानसिक कष्ट आदि। "द हिन्दू" ने प्रकाशित किए अपने एक सर्वे में पाया कि भारत में 37% वृद्ध लोगों के साथ गलत व्यवहार किया जाता है। जैसे कि जबरदस्ती काम करवाना, जबरदस्ती चुप करवाना अथवा कुछ वृद्ध तो मार-पीट तक का शिकार हुए हैं। वहीं "इकनोमिक टाइम्स" के एक सर्वे के अनुसार 29% लोग अपने बुजुर्गों को अपने साथ रखना ही नहीं चाहते। और विडंबना देखिए, कि यह उस देश का हाल है जहां आज भी माता-पिता और गुरु को भगवान माना जाता है, छोटी सी उम्र में नाना-नानी के घर जाना मानो स्वर्ग जाने जैसी खुशी। परन्तु इस समाज में वृद्ध लोगों का ऐसा हाल, इस समाज की प्रगति व युवा पीढ़ी की सोच दोनों ही बातों पर प्रश्न-चिन्ह लगाता है।

यदि भारतीय उपमहाद्वीप से हटकर विश्व स्तर पर देखें, तो वहां भी कुछ ऐसा ही हाल है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मौजूदा आंकड़ों के अनुसार हर 6 में से 1 वृद्ध किसी एक प्रकार के शोषण का शिकार है। वहीं 11.6% लोग मानसिक शोषण का शिकार हैं। 6.8% लोग वित्तीय शोषण का शिकार हैं। यानि वे लोग जिन्होंने जिंदगी भर अपने परिवार का पालन-पोषण किया आज अपनी दवाई व दो वक्त की रोटी के लिए भी मजदूरी करने को विवश हैं। यदि आप अंतरजाल पर खोजें तो आप शायद ही कोई मंच पाएंगे जिसपर वृद्ध मजदूरी पर चर्चा होती हो। परंतु यदि आप अपने नगर में निकलें और चारों दिशाओं में दृष्टि घुमाएं तो आप अवश्य ही कुछ वृद्ध लोगों को रेहड़ी पर खाद्य-पदार्थ बेचते अथवा हाथ-गाड़ी खीचते पाएंगे।

आज केवल भारत में ही 728 "ओल्ड-ऐज होम्स" हैं और इन ओल्ड ऐज होम्स में ऐसे कई वृद्ध हैं, जिन्हें उनके पुत्र व पुत्री ने उन्हें वहाँ छोड़ दिया है। "अर्थ सेवियर फाउंडेशन" के संस्थापक रवि कालरा द्वारा साँझा की गई कहानियों के अनुसार उन्होंने ऐसे भी मामले देखे हैं जहां सड़क से उठाये वृद्ध व्यक्ति के उपचार के बाद मालूम पड़ा कि वे काफी पढ़े-लिखे थे। और दौलत की चाह में बच्चों ने अपने ही सगे रिश्तेदारों के साथ ऐसा सलूक किया। यदि गौर से सोचा जाए तो क्या उम्मीद रखते हैं ये वृद्ध हमसे? केवल थोड़ा सा स्नेह, देख-रेख और दो वक्त की रोटी? जिन लोगों ने हमें इतने स्नेह एवं प्यार से पाला-पोसा, क्या हम इतने निर्दयी हैं कि दिन के पंद्रह-बीस मिनट भी उन्हें नहीं दे सकते। यदि आप मौजूदा हालात का आंकलन करें तो आज विश्व स्तर पर अनेक कानूनों का निर्माण हो रहा है। भारत में 2018 में वृद्ध जनों के रख रखाव के नियमों में बदलाव करके उनमें यह प्रावधान जोड़ा गया कि अब से पुत्री और दामाद भी माता-पिता की देख-रेख के लिए जिम्मेदार होंगे। ऐसा न करने पर दण्ड का प्रावधान भी रखा गया। परंतु इन नियमों की मौजूदगी यदि हमें सोचने पर विवश न करे तो शायद हमारे अस्तित्व पर ही प्रश्न उठना जायज़ है। यदि आप अभी भी ये सोच रहे हैं कि मुझे क्या करना चाहिए है तो आप पहले ये सोचिए कि समाज की सोच छोटी है या आपकी।

♦♦♦

हम कर्मशील हैं

- देशना सचान
एम.टैक. (सी.एस.ई)

कसमें भी खाते हैं वादे भी करते हैं,
कभी-कभी हम इरादे भी करते हैं।

90 अंकों का वादा भी करते हैं,
पर 55 से कभी आगे नहीं बढ़ते हैं।

अधिकतम मेहनत करने की सोचा भी करते हैं,
फिर भी परीक्षा पत्र में ना जाने क्या-क्या भरते हैं।

परिणाम के पश्चात जूते भी पड़ते हैं,
और अच्छा करने को जूझते हैं, लड़ते हैं।

सोचने में इतना समय भी लुटाया करते हैं,
कि पढ़ने का समय भी गंवाया है।

किताबों का दृष्य कम मोटापा ही देखते हैं,
पढ़ने का यह ढंग नहीं दिखावा ही करते हैं।

हर तरफ फटकारों के छींटे ही पड़ते हैं,
पर कर्मशील हैं हम तभी परिश्रम से पीछे नहीं हटते हैं।

♦♦♦

हरियाली

- गौरव
एम.बी.ए. (आई.टी.)

हरियाली - हरियाली तू कहां से आयी,
खेतों की मिट्टी के कण-कण से आयी।

किसान ने धरती के रक्त कणों से बनाया,
तभी तो किसानों द्वारा इस संसार में आयी।

खेल-खेल में मन को हरा-हरी हरियाली,
लाई है इस जगत में खुशहाली।

यहां सभी है हरियाली के दिवाने,
तभी तो किसी के लिए, कोई नहीं हैं पैमाने।

जलचर नग पर सभी चराचर हैं अचल,
हरियाली-हरियाली तू कहां से आयी।

♦♦♦

अचल निष्ठा ही महान कार्यों की जननी है।
- स्वामी विवेकानंद

जिंदगी

- ख्याति बलियान
प्रोजेक्ट एसोसिएट

आज बादलों ने फिर साज़िश की
जहां मेरा घर था वहीं बारिश की
अगर फलक को जिद है, बिजलियां गिराने की
तो हमें ज़िद है, वहीँ पर आशियां बनाने की।

बुलंद हो हौंसला तो मुठी में हर मुकाम है,
मुश्किलें और मुसीबतें तो ज़िंदगी में आम है,
ज़िंदा हो तो ताकत रखो बाजुओं में लहरों के खिलाफ तैरने की,
क्योंकि लहरों के साथ बहना तो लाशों का काम है।

पलकों पे आंसुओं को कभी सजाना नहीं चाहिए,
हर ज़ख़्म भरने के लिए दवा नहीं चाहिए,
राहों को मंज़िलों से कभी दूर नहीं कर पाओगे,
मुश्किलों को देख कभी हार मान बैठ जाना नहीं चाहिए।

♦♦♦

ईश्वर हर जगह नहीं हो सकता,
इसलिए उसने मां को बनाया।

मां तेरा धन्यवाद

- नीति मेहरा
एम.टैक. (आई.टी.)

दर्द सहकर जिसने जीवन दिया,
आज उस जीवन देने को नमन करती हूँ,
मैं मां को धन्यवाद करती हूँ।
ऊंगली पकड़ कर सिखाया चलना जिसने,
अपने पैरों पे खड़ा होना सिखाया जिसने,
उसी मां को आज मैं प्रणाम करती हूँ।
कोई नहीं दुनिया में बढ़कर जिसके लिए,
हम बच्चों से है हर खुशी जिसके लिए,
आज उस जान को नमन करती हूँ,
मैं मां को धन्यवाद करती हूँ।
अपनी खुशियां भुलाके जो रखे ध्यान दूसरों का,
दर्द होके भी जो ना दिखाए,
और बस रहती मुस्कुराए,
उसी मां को आज मैं प्रणाम करती हूँ।
जीवन देकर दुनिया देखने का मौका जिसने दिया
साथ देकर एक अच्छा इंसान जिसने बनाया,
कोई नहीं ले सकता जगह जिसकी,
आज उस मां को मैं धन्यवाद करती हूँ।
इतना सब किया तूने मां मेरे लिए,
अब मेरी है बारी वो हर कर्ज़ चुकाने की,
जो लिया तूने सिर्फ मेरी खुशी के लिए,
आज तुझे मैं प्रणाम करती हूँ,
ऐ मेरी मां तुझे मैं धन्यवाद करती हूँ।
देख ना सकूं जिसकी आंखों में आंसू मैं,
मिटाने हैं अब मुझे हर गम हर घाव जिसके
ना रूकुंगी, ना झुकुंगी,
तेरे दिए हुए जन्म को यूं व्यर्थ न करूंगी,
धन्यवाद करूंगी हर कदम पे तेरा,
वादा है मेरी मां तुझसे मेरा,
वादा है ये मां मुझसे मेरा।।

♦♦♦

सच्ची मित्रता

-राजेन्द्र सिंह
परियोजना अधिकारी

बात किसी की आम भी, लगने लगे जब खास
मन कहता उड़के चलो, पल में उनके पास
कहीं भी निकलो शहर में, दिखते लोग पचास
पर दिल की चाहत यही, वो दिख जाएं काश
वो जो समझे आपको, आपके मन की बात
दुःख सुख भी सब आपके, आपके सब जज्बात
गुमसुम से रहने लगो, मन में उनका ध्यान
नयन भी उनकी ओर हैं, उनकी तरफ हैं कान
संग जिनके लगने लगे, जीवन ये भरपूर
नहीं जरूरी पास हों, वो हो सकते हैं दूर
लेकर मन में फिर रहे, उनका ही तुम ध्यान
उनके बिन जीवन लगे, जंगल एक विरान
जिनके हक़ में सोचकर, मुंह पर हो मुस्कान
वो नर ईश्वर तुल्य है, सब रत्नों की खान
गलती पर जो ऐठ दे, सख्ताई से कान
पर तत्पर हो तेरे लिए, देने खुद की जान
सुख बांटे सब आपके, दुःख में भी हो शरीक
चोट लगे जो आपके, निकले उसकी चीख
तन मन धन से आप पर, जिसका हो अधिकार
खुद से ज्यादा आपको, करता हो जो प्यार
कभी तो वो हंसता रहे, सुनकर बड़ी भी बात
छोटी सी कभी बात पर, लगे काटने दांत
कभी तुम्हारे बीच में, पैदा करे तकरार
तुम्हे मनाने को कभी, मन्नत करे हज़ार
जाए तुम्हे कभी छोड़कर, अपनी पलक भिगोय
अश्रु आँख जो आपके, संग तुम्हारे होय
कभी तुम्हे बिन बात के, कस दे तंज हजार

फिर मांगे माफ़ी आपसे, हो के अति लाचार
कभी बे-वजह आपसे, लड़ने को हो तैयार
कभी तो क़दमों में बिछे, सर पर कभी सवार
परिचय भी दे आपका, जैसे उसकी चीज
कोई चिडाए आपको, खुद भी जाए खीज
बाबुल जब उसके कभी, लगने लगे उसे खींच
दबा ले अंगुली प्यार से, दो दांतों के बीच
जब कभी उसको लगे, हो गए तुम नाराज
आपके पीछे चीखकर, देने लगे आवाज
खातिर तेरे प्यार के, छोड़ दे सारे काज
बिना थके उस मित्र को, देते रहो आवाज
तुम्हें मिटाने को कभी, लगा दे पूरा जोर
खुद के मिटने में भी पर, करे ना कोई शोर
सौभाग्य अगर हो आपका, वो हो महिला मीत
तो फिर धुन तैयार है, गाते रहो तुम गीत
कभी करे संग आपके, सब मनचाहे खेल
जोर से बोले फिर कभी, जाना है क्या जेल
अवसर मिलते ही तुम्हें, देख के सब हालत
धीरे से उसके कान में, छेड़ दीजिये बात
उत्सुकता अब बढ़ रही, लेने फेरे सात
अब मुहूर्त देख लो, कब होगी बारात
वो जो निकले ब्याहता, मत करना कुछ खेद
वजह नहीं है ये कोई, रखने के मतभेद
बहुत बड़ी है मित्रता, प्यार है छोटा नाम
प्यार से निभती मित्रता, बड़े दिलों का काम
दुःख सुख सह लो साथ में, न पहुचाओ चोट
मित्रता लम्बी चले, अगर ना हो दिल में खोट
मिल जाये ऐ मीत तो, नहीं छोड़िये हाथ
धर्म न उसका पूछिए, नहीं पूछिए जात

♦♦♦

भूख, हाय भूख

- विद्यासागर
परियोजना अभियंता

भूख, भूख, भूख
हाय माँ बड़ी जोर से लगी है भूख,
बस बेटा, अभी तेरे बापू आते होंगे,
राशन का कुछ सामान लाते होंगे,
मां! दो दिन हो गए, अब और सहा नहीं जाता
भूखा मुझसे अब रहा नहीं जाता।

देखती हूँ जाकर,
शायद रसोई में कुछ सामान पड़ा हो.
यूं ही देख-देखकर कब तक बंद करती रहूँ
इन खाली पड़े डिब्बों को
आखिर कैसे समझाऊँ
अपने भूख से बिलख रहे, फूल से बच्चों को,
जब मां न आई बाहर, तब बच्चे पहुंचे रसोई में
मिला क्या मां? खाने को कुछ रसोई में
पेट में चूहों की दौड़ लगी है, बडी जोर से मां भूख लगी है
मन ही मन सोच रही है मां, क्या जवाब दू बच्चों को
अब तो जवाब देने की हिम्मत भी टूटने लगी है।

तभी दरवाजे को खटखटाता है कोई
जोर-जोर से उसे बजाता है कोई,
दौड़ती है मां दरवाजे की ओर
जरूर दरवाजे पर तेरा बापू होगा, हाथ में राशन का सामान होगा।
खोलती है दरवाजे को बड़ी आस से
देख रहे हैं बच्चे भी मासूम नजरें लगाए बाप को,
तभी खुलता है दरवाजा,

बापू जरूर है दरवाजे पर, हाथ में भी है कुछ सामान,
पर सामान में आटा, चावल, दाल नहीं, बल्कि है शराब की बोतल।

दरवाजे पर ही मां पूछती है बाप से कुछ सवाल,
क्या पता है आपको घर का कुछ हाल,
अपने नशे का है ख्याल, बच्चों की भूख का नहीं अहसास,
ठनक जाता है माथा बाप का, मुझसे जुबान लड़ाती हो कहकर,
कर देता है उसपर जूतों की बरसात, गालियों की बैछार,
बच्चे दौड़कर लिपट जाते हैं मां से कहते है मां,
अब हमें न भूख है, न है प्यास,
मर गई भूख, मर गई प्यास।

♦♦♦

राष्ट्रीय व्यवहार के लिए हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

\- महात्मा गाँधी

26 जनवरी, 2020

- भुबन दास
पी.एस.एस.

हर साल की तरह इस साल भी मैं सोचता रहा कि इस बार कौन सी कहानी लिखूं? मैंने तय किया क्यों ना इस बार अतीत और वर्तमान के अनुभव सबके साथ साझाँ करूँ ? प्रति वर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया जाता है, यह हम सबको पता है। बचपन में स्कूल में जब यह पर्व मनाया जाता था, उसकी अलग ही अनुभूति होती थी। जैसे-जैसे बड़ा होता गया समझ तो बढ़ गई पर पहले जैसा रोमांच नहीं रहा। बचपन में स्कूल में सुबह-सुबह चले जाते थे, घर के बड़े और छोटे भाई बहन के साथ, उस दिन स्कूल में सबको आने की अनुमति होती थी। अध्यक्ष महोदय द्वारा झण्डा फहराने के बाद भाषण होता था, सब की तालियों से स्कूल तो क्या पूरा आस-पड़ोस गूंज उठता था। देशभक्ति के गीतों से गांव-शहर में एक जोश भरी अनुभुति होती थी, उसके बाद बिस्किट-टॉफी भी मिलता था। उसका स्वाद ही कुछ अलग होता था। वह सब कुछ आज भी होता है पर वह रोमांच नहीं होता है।

यह तो थी अतीत की बातें, अब मैं वर्तमान, यानी 26 जनवरी 2020 की बातें बताता हूँ। इस साल मेरी बेटी और भाँजी ने कहा कि उन्हें राजपथ यानी इण्डिया गेट की गणतन्त्र दिवस की झाँकी देखनी है। मैं भी हर साल सोचता था, एक बार राजपथ पर इस झाँकी को देखने जरुर जाऊँगा, पर सुरक्षा के कारण नहीं जा पाता, सुरक्षा इतनी कड़ी होती है कि मन मार के दूरदर्शन पर देखना पड़ता है।

तो इस साल मैने जाने का निश्चय किया, मैं और मेरी बेटी और भाँजी घर से निकले पर सड़क पर कोई वाहन न होने के कारण देर तक बस स्टेन्ड पर खड़ा रहा। कुछ देर बाद एक बस आयी तो उस में बैठ गया। कुछ दूर तक यानी पाण्डव नगर से लक्ष्मीनगर तक गया उसके बाद बस आगे नहीं जायेगी, यह कहकर हमें बस से उतार दिया, बच्चों की जिद के आगे मैं भी बेबस था, उनको झाँकी देखना था। मैने उनसे कहाँ कि और कोई उपाय नहीं है तो बच्चो ने कहा कि चलो पैदल ही चलते हैं। असल में मेरे बेटी गाँव में रहती है, इस बार वह दिल्ली आयी हुई थी। उसने हर बार हर प्रदेश की झांकी दूरदर्शन पर ही देखी है तो उसने निर्णय किया क्यों न इस बार अपनी आखों से ही सुन्दर-सुन्दर झांकी देखा जाये, तो हम चलने लगे और पीछे मुड़ के देखने लगे कि कोई ऑटो तो नहीं आ रहा है? पर एक दो आ भी रहा तो रुका नहीं, हम तेजी से आई.टी.ओ. की तरफ चलने लगे। कुछ देर चलने के बाद एक ऑटो आया और

हमारे सामने रुका, ऑटोवाले ने कहा कि बैठो, उनका व्यवहार देखकर हम चकित रह गये। हमने सोचा ऐसे कैसे हो सकता है? हमने तो उनको रुकने के लिए भी नहीं कहा, वह खुद ही रुका। हम आई.टी.ओ. के पास उतर के पैसे देने लगे तो ऑटोवाले ने कहा कि उसकी कोई जरुरत नही है, हमे आश्चर्य हो रहा था। ऑटो में पहले से बैठे एक सज्जन ने कहा कि आप दो बच्चों को लेकर पैदल ही चले जा रहे थे मुझे लगा कि आप लोग जरुर झाँकी देखने जा रहे होंगे, तो मैंने अपने साथ बैठा लिया। मैने उनको पैसा देना चाहा पर उन्होंने कहा कि इसकी कोई जरुरत नहीं है। मैने उनको धन्यवाद कहा, उन्होंने भी मुस्कुराते हुए अभिवादन किया, मेरे बेटी बहुत खुश हुई और कहा कि अंकल बहुत अच्छा है। अंकल न होता तो शायद ही हम इतना सुन्दर झाँकी देख पाते। असल में ऐसा ही होना चाहिए, हर इंसान को एक दूसरे की जितनी भी हो सके मदद करनी चाहिए, तभी तो सच्चा गणतन्त्र स्थापित होगा। गणतन्त्र दिवस तो हर साल आता-जाता रहेगा, पर ऐसा सुखद अनुभव शायद ही दोबारा आए। हम जब भी इस घटना को याद करते हैं तो एक अलग आनन्द की अनुभूति होती है। उस दिन मेरी बेटी इतना सुन्दर झाँकी देख के फूले नहीं समा रही थी, मुझे भी बहुत अच्छा लगा था। कहते हैं जहाँ चाह वहां राह।

"भारत माता की जय"

♦♦♦

सुविचार

किसी की आदत देखनी हो तो उसे इज्जत दो।
किसी की फितरत देखनी हो तो उसे आजादी दो।
किसी की नीयत देखनी हो तो उसे कर्ज दो।
किसी के गुण देखने हों तो उसके साथ खाना खाओ।
किसी का सब्र देखना हो तो उसे हिदायत दे कर देख लो।
किसी की अच्छाई देखनी हो तो उससे सलाह ले लो।

गृहस्थान

- गौरव
एम.बी.ए. (आई.टी.)

हम कैद हैं, अपने घरों में,
बाहर कोरोना डरा रहा है।

डर के भी निडर हो कर रहते हैं हम,
क्योंकि प्रशासन हमें, निडर बना रखा है।

अपने को परवाह किए बिना, हमारी रक्षा हेतु तत्पर हैं,
वो लोग जी ख्याल रखते हैं हमारे।

हमें नियम शर्तों का पालन करना है,
तभी तो अपने वतन को कोरोना से बचाना है।

हम कैद हैं, अपने घरो में,
बाहर कोरोना डरा रहा है।

♦♦♦

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुंचाना,
यही तपस्या का स्वरूप है।

- तिरुवल्लुवर

ऐ ज़िंदगी

- नीति मेहरा
एम.टैक. (आई.टी.)

आज भली है तो कल बुरी है,
ये ज़िन्दगी है साहब,
उतार-चढाव से भरी है।

आज अच्छा है आज हमारा है,
तो कल किसी और का है,
ये ज़िन्दगी का एक लम्हा है साहब
हर किसी के लिए गुज़र जाना है।

यहां एक सीढ़ी है,
ऊंचाइयों को छूने की
चढ़ गए तो कामयाब हैं,
रूक गए तो बनकाम हैं।

खुद को आगे धकेलना,
न रूकना कभी तुम
किसी के खीचने से
और दम लगाके आगे बढ़ना तुम।

तुम्हारी ही ज़िन्दगी है,
कोशिश से हासिल करना तुम
किसी की वजह से
इसे व्यर्थ न करना तुम।

खुशनसीब हो तुम
जो इस धरती पर आये,
कहीं न कहीं.
कुछ सुधारने आये,

ना समझना खुद को
ना किसी काम का
तुमने करना है ज़रूर कुछ बड़ा काम
उस खुदा का।

हंसी पलों से भरी है ये ज़िन्दगी,
हर एक पल को खुलके जीना तुम,
ये ज़िन्दगी बहुत हसीन है
इसे व्यर्थ ना करना तुम
इसे व्यर्थ ना करना तुम।

♦♦♦

यात्रा बद्रीनाथ धाम की

- देशना सचान
एम.टैक. (सी.एस.ई)

देश विदेश की यात्रा करना अत्यंत रोमांचक एवं मनोरंजक होता है। जीवन में मुझे कई स्थानों की यात्रा करने का अवसर मिला। विशेषकर मुझे पर्वतीय प्रदेशों की यात्रा करने में विशेष आनंद मिलता है।

ग्रीष्मावकाश में हम सपरिवार बद्रीनाथ की पवित्र यात्रा पर गए। इस यात्रा को लेकर हम अत्याधिक रोमांचित एवं उत्साहित थे। देहरादून में मेरे दादा जी का आवास है, यहां लगभग हर साल हम अपनी ग्रीष्मावकाश व्यतीत करने आते हैं। बद्री विशाल की यात्रा के लिए हम देहरादून से सुबह-सुबह 3:30 बजे रवाना हुए। देहरादून से बद्रीनाथ लगभग 350 किलोमीटर की दूरी पर है। ऋषिकेश से बद्रीनाथ तक का मार्ग लगातार घुमावदार तथा चढ़ाई वाला है। सबसे पहले हम देवप्रयाग तीर्थ स्थान तक पहुंचते हैं, जहां भागीरथी नदी के साथ अलकनंदा का मिलन होता है। इसके बाद श्रीनगर होते हुए हम रुद्रप्रयाग पहुंचे, जहां अलकनंदा तथा मंदाकिनी का संगम दृश्य अत्यंत मनोहर लगता है। बद्रीनाथ की यात्रा में 6 प्रयाग पड़ते हैं। यहां से हम आगे बढ़ते हैं। जैसे-जैसे हम ऊंचे पर्वतों की ओर बढ़ते जाते हैं वहां की सुंदरता व मनमोहक खुशबू अपनी ओर खींचती ले जाती है। कुछ और दूरी तय करके हम कर्णप्रयाग पहुंचते हैं। चमोली, गोपेश्वर होकर हम जोशीमठ पहुंच गए, जो लगभग 6500 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां हमें दो मार्ग मिलते हैं, एक रास्ता बर्फ की वादी होली तक जाता है जहां विदेशी सैलानी रीसाइक्लिंग का लुत्फ उठाते हैं और दूसरा रास्ता हमारी मंजिल तक जाता है। यहां से रास्ता और संकरा हो जाता है। इसलिए यहां वन-वे सिस्टम से गाड़ियां चलती हैं। इस पूरी यात्रा में हमारे साथ साथ चलती जाती हैं- अलकनंदा। ऊंचे ऊंचे पर्वतों से नीचे बहती अलकनंदा इतनी सकरी दिखती हैं जैसे कि जल की कोई पतली सी धारा हो।

यहां से बद्रीनाथ लगभग 55 किलोमीटर है। यात्रा लंबी एवं घुमावदार रास्ते वाली होने के कारण हम हर पड़ाव पर रुकते हुए गए। हमारा अगला पड़ाव था- हनुमान चट्टी। इसके विषय में कहा जाता है कि जब पांडव वनवास पर गए थे तो इसी स्थान पर हनुमान जी उन्हें वृद्ध रूप में मिले थे। यहां से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी तय करने पर हम अपनी मंजिल पवित्र बद्रीनाथ धाम पहुंचते हैं।

बद्रीनाथ के बर्फीले पहाड़ों का दृश्य देखने योग्य होता है। यहां नर और नारायण पर्वतों की बर्फीली चोटियां अप्रतिम सुंदर हैं। जब सूर्य की प्रथम किरण इन हिमाच्छादित चोटियों पर पड़ती है तो चोटियां सोने की तरह चमक उठती हैं, जबकि नीचे चारों ओर अंधेरा रहता है। यह अनोखा दृश्य कुछ ही पलों के लिए रहता है। यहीं भगवती अलकनंदा के दाहिने तट पर निर्मित है प्राचीन भव्य श्री बद्री विशाल मंदिर। यहां श्री बद्रीनारायण श्यामल स्वरूप में बहुमूल्य वस्त्र आभूषण एवं मुकुट धारण किए सुशोभित हैं। इनकी दाहिनी ओर कुबेर और गणेश तथा बाएँ ओर लक्ष्मी जी तथा नारायणगढ़ है।

बद्रीनाथ के मंदिर के नीचे अलकनंदा के तट पर गर्म जल का तप्त कुंड है। जिसमें स्नान करके ही श्रद्धालु भगवान के दर्शन करते हैं। हमने श्री बद्रीनाथ विशाल मंदिर के भव्य दर्शन किए। ईश्वर की परम कृपा से यह कठिन यात्रा संपन्न हुई। जीवन में एक बार फिर बद्रीनाथ पवित्र धाम की यात्रा करने की इच्छा लिए हुए ईश्वर की प्रकृति का सम्मान एवं देखभाल का वचन लेती हूं।

♦♦♦

संसार की कोई लिपि यदि सर्वाधिक पूर्ण है तो एकमात्र देवनागरी ही है।

- राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन

प्रणब मुख़र्जी

- सुनीता अरोड़ा
सह निदेशक

प्रणब मुख़र्जी का जन्म 11 दिसम्बर, 1935 को पश्चिमी बंगाल के वीरभूमि जिले के विरनाहर नामक शहर के समीप स्थित मिराती गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इन्होंने वीरभूमि के सूरी विद्यासागर कॉलेज में शिक्षा ग्रहण की। कोलकाता विश्वविद्यालय से इन्होंने इतिहास और राजनीतिक विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री के साथ-साथ कानून की डिग्री हासिल की। बाईस वर्ष की आयु में इनका विवाह शुभ्रा मुख़र्जी के साथ हुआ था। इनके दो बेटे और एक बेटी है। इन्होंने अधिवक्ता और कॉलेज प्राध्यापक के अलावा पत्रकार के रूप में बंगला प्रकाशन संस्थान देशेर डाक (मातृभूमि की पुकार) में भी कार्य किया था।

इनके पिता कामदा किंकर मुखर्जी सन 1920 से ही कांग्रेस के सक्रिय सदस्य थे। इसलिए राजनीति इन्हें विरासत में ही मिली थी। पांच दशक के संसदीय कैरियर के दौरान इन्होंने कई महत्वपूर्ण केन्द्रीय मंत्रालयों के कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्य किया। जिसमें दो बार केंद्रीय वित्त मंत्री के कार्यभार का भी सफलतापूर्ण निर्वहन किया। सन 1984 में “यूरोमनी पत्रिका” के एक सर्वेक्षण में इनका विश्व के सबसे अच्छे वित्त मंत्री के रूप में मूल्यांकन किया गया। 25 जुलाई, 2012 से 25 जुलाई, 2017 तक भारत के राष्ट्रपति के पद को भी सुशोभित किया।

वर्ष 1997 में इन्हें “सर्वश्रेष्ठ सांसद” के ख़िताब से नवाजा गया। सार्वजानिक मामलों में इनके योगदान के लिए सन 2008 के दौरान इन्हें “पदम विभूषण” पुरस्कार भी प्रदान किया गया। इनकी अविस्मरणीय सेवाओं के लिए 26 जनवरी, 2019 के अवसर पर इन्हें भारत के सबसे बड़े नागरिक सम्मान **“भारत रत्न”** से भी सम्मानित किया गया।

दिल्ली के सैन्य अस्पताल में उपचाराधीन होने के दौरान 31 अगस्त, 2020 को इन्होंने अंतिम साँस ली। इनके निधन के साथ ही भारतीय राजनीति का एक अध्याय पूर्ण हो गया। जीवन भर अपनी सादगीपूर्ण जीवन शैली के लिए चर्चा में रहने वाले प्रणब दा की अंतिम यात्रा भी उतनी ही सादगीपूर्ण रही।

भारत के इस महान सपूत को नम आँखों से हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि.....

♦♦♦

जरा सोचिए

हिन्दी हमारी राजभाषा है
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है
हिन्दी हमारी राज्यभाषा है

फिर हिन्दी के कार्य में संकोच क्यों?

हिन्दी में कार्य करें, राष्ट्र का निर्माण करें।

ऋषि कपूर

-ओम प्रकाश शर्मा
हिन्दी परामर्शकार

ऋषि कपूर एक ख्याति प्राप्त अभिनेता थे। ऋषि कपूर एक ऐसे परिवार से संबंध रखते थे, जिन्होंने बॉलीवुड में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन्होंने फिल्मी कैरियर में अनेक फिल्में की। इस दौरान उन्होंने कई अवार्ड भी हासिल किए। वर्ष 2008 में ऋषि कपूर को फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से भी नवाजा गया।

ऋषि कपूर का जन्म 04 सितम्बर, 1952 को मुंबई के चेंबूर में हुआ था। ऋषि कूपर बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता राज कपूर के मंझले बेटे थे। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कैपियन स्कूल, मुंबई और बाद में आगे की शिक्षा मेयो कॉलेज, अजमेर से पूरी की। ऋषि कपूर की शादी बॉलीवुड अभिनेत्री नीतू कपूर से हुई थी। इनकी दो सन्तान हैं - बच्चे रणवीर कपूर और रिधिका कपूर। इन्होंने 1970 में अपने पिता की फिल्म ‘मेरा नाम जोकर’ में अभिनय करके बॉलीवुड में डेव्यू किया और बतौर एक्टर सन् 1973 में फिल्म ‘बॉबी’ से किया था। इस फिल्म के लिए इन्हें बेस्ट एक्टर का फिल्मफेयर अवार्ड भी मिला था। ऋषि कपूर ने लीड एक्टर के तौर पर 51 फिल्मों में अभिनय किया। उन्होंने अपनी पत्नी के साथ 12 फिल्मों में अभिनय किया।

ऋषि कूपर वर्ष 2018 से ‘बोन मेरो कैंसर’ से पीड़ित थे। उपचार के लिए वे न्यूयार्क गए और लम्बे उपचार के पश्चात 26 सितम्बर, 2019 को भारत लौटे। 29 अप्रैल 2020 को सांस लेने में तकलीफ के कारण उन्हें मुंबई के अस्पताल में भर्ती कराया गया। 30 अप्रैल 2020 को बॉलीवुड का यह चमकता सितारा सभी को अलविदा कहकर इस दुनिया से चला गया। भारत के इस लोकप्रिय अभिनेता को नम आंखों से हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि.....

♦♦♦

सी-डैक, नोएडा में हिन्दी पखवाड़ा-2019 का सफल आयोजन : एक रिपोर्ट

- ओम प्रकाश शर्मा
हिन्दी परामर्शकार

प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक), नोएडा, इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त वैज्ञानिक संस्था है, जो सुचना प्रौद्योगिकी के विकास में कार्यरत रहने के साथ-साथ केन्द्रीय सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए भी निरंतर सक्रिय रहती है। राजभाषा संबंधी विभिन्न आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करने और राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए इस केन्द्र में समय-समय पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन करने के अलावा प्रतिवर्ष सितम्बर माह में हिन्दी पखवाड़ा और हिन्दी दिवस मनाया जाता है। इस दौरान विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया जाता है, जिसमें कर्मचारियों द्वारा उत्साहपूर्वक भागीदारी की जाती है। इन प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान करके उनका उत्साहवर्धन किया जाता है। कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रेरित करने हेतु संगत सहायक सामग्री उपलब्ध कराने के अलावा भारत सरकार के आदेशों के अनुसार हिन्दी में मूल रूप से टिप्पण एवं आलेखन संबंधी वार्षिक प्रोत्साहन योजना भी लागू की गई है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें नियमित अंतराल पर आयोजित करके राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा की जाती है।

हिन्दी दिवस 2019 पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के अवसर पर कार्यकारी निदेशक महोदय द्वारा सी-डैक, नोएडा केन्द्र की गृह पत्रिका अभिव्यक्ति के 11वें अंक का विमोचन किया गया। वर्ष 2009 से इस पत्रिका का वार्षिक आधार पर नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। जिससे राजभाषा हिन्दी के प्रति यहां पर कार्यरत कार्मिको की प्रतिबद्धता प्रमाणित होती है।

हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2019 के दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेता/पुरस्कृत कर्मचारियों का विवरण निम्नानुसार हैः

हिन्दी पत्रिका कवर डिज़ाइन	
प्रथम पुरस्कार	श्री मुकुन्द कुमार रॉय, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एस.एन.एल.पी.
हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	श्री ऋतेश द्विवेदी, परियोजना सहायक, डाटा सेंटर
द्वितीय पुरस्कार	श्री नितेश कुमार, कार्यालय सहायक, प्रशासन
तृतीय पुरस्कार	श्री अनिल कुमार, सचिव, प्रशासन
हिन्दीतर पुरस्कार	श्री सौरिश बेहेरा, संयुक्त निदेशक, इम्बेडिड सिस्टम
सांत्वना पुरस्कार	श्री पलविन्द्र सिंह, परियोजना सहायक, एस.एन.एल.पी.
हिन्दी भाषा प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	श्री अनिल कुमार, सचिव, प्रशासन
द्वितीय पुरस्कार	श्री आशुतोष पाण्डेय, प्रधान तकनीकी अधिकारी, बी.डी.पी.एम.
तृतीय पुरस्कार	श्री अजय पाल, प्रशासनिक अधिकारी, एम.एम.जी.
हिन्दीतर पुरस्कार	श्री सौरिश बेहेरा, संयुक्त निदेशक, इम्बेडिड सिस्टम
सांत्वना पुरस्कार	श्री मुकुन्द कुमार रॉय, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एस.एन.एल.पी.
हिन्दी टंकण प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	श्री चन्द्र मोहन, परियोजना सहायक, एस.एन.एल.पी.
द्वितीय पुरस्कार	श्री राहुल चौधरी, डाटा इंट्री ऑपरेटर, एस.एन.एल.पी.
तृतीय पुरस्कार	श्री आशुतोष पाण्डेय, प्रधान तकनीकी अधिकारी, बी.डी.पी.एम.
हिन्दीतर पुरस्कार	श्री भुबन दास, पी.एस.एस., एस.एन.एल.पी.
सांत्वना पुरस्कार	श्री रमन कांत, डाटा इंट्री ऑपरेटर, एस.एन.एल.पी.
मेरी भाषा - मेरी वाणी ऐप आधारित प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	श्री रमन कांत, डाटा इंट्री ऑपरेटर, एस.एन.एल.पी.
द्वितीय पुरस्कार	सुश्री हिमानी गर्ग, परियोजना अभियंता, बी.डी.पी.एम.
तृतीय पुरस्कार	सुश्री अनुराधा शर्मा, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी.
हिन्दीतर पुरस्कार	सुश्री सुपर्णा दत्ता, प्रशासनिक अधिकारी, मानव संसाधन
सांत्वना पुरस्कार	श्री चन्द्र मोहन, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी.
सी-डैक, नोएडा स्कूल के छात्र	
प्रथम पुरस्कार	सुश्री पूर्णिमा ओझा
द्वितीय पुरस्कार	श्री सिद्धार्थ गुप्ता
तृतीय पुरस्कार	सुश्री पारू शर्मा

♦♦♦

हिन्दी पुरस्कार वितरण कार्यक्रम-2019 के अवसर पर सी-डैक, नोएडा केन्द्र की गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 11वें अंक का विमोचन करने हुए कार्यकारी निदेशक श्री विवेक खनेजा एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

हिन्दी पुरस्कार वितरण कार्यक्रम-2019 के अवसर पर विजेता प्रतिभागी को पुरस्कार/ प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए कार्यकारी निदेशक श्री विवेक खनेजा

हिन्दी पुरस्कार वितरण कार्यक्रम-2019 के अवसर पर विजेता प्रतिभागी को पुरस्कार/ प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए कार्यकारी निदेशक श्री विवेक खनेजा

हिन्दी पुरस्कार वितरण कार्यक्रम-2019 के अवसर पर विजेता प्रतिभागियों के साथ कार्यकारी निदेशक श्री विवेक खनेजा एवं अन्य अधिकारीगण

हिन्दी पखवाड़ा-2019 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित सी-डैक, नोएडा केंद्र के अधिकारी एवं कर्मचारी

हिन्दी पखवाड़ा-2019 के अवसर पर आयोजित हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागी एवं निर्णायक मंडल के सदस्य

हिन्दी पखवाड़ा-2019 के अवसर पर आयोजित हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी

सी.बी.एस.ई. द्वारा वर्ष 2019 में आयोजित 10वीं की परीक्षा (हिन्दी विषय) में ए1 ग्रेड प्राप्त करने पर सी-डैक, नोएडा केंद्र के अधिकारी की पुत्री को पुरस्कार/प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा के अध्यक्ष

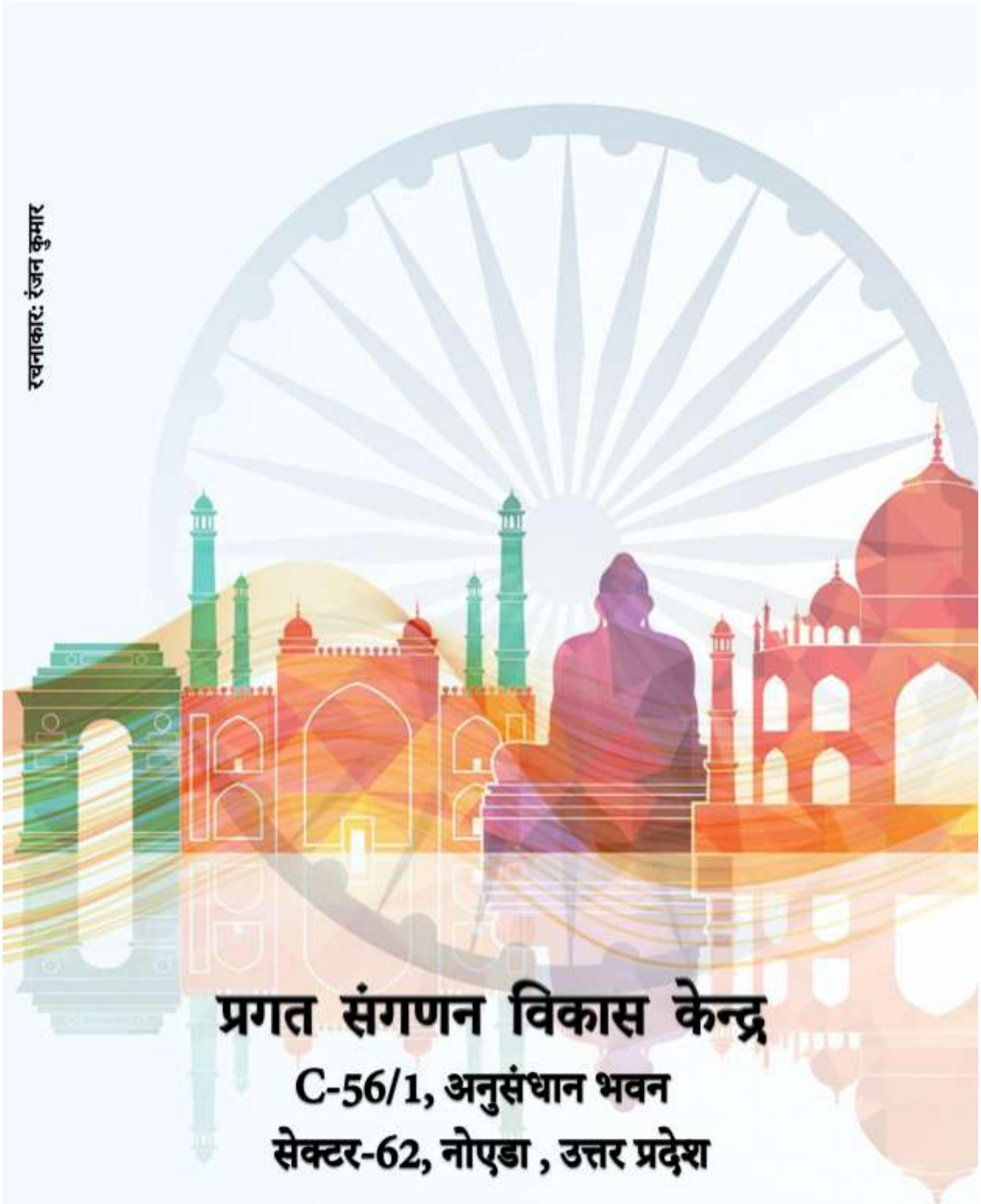

रचनाकार: रंजन कुमार

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

C-56/1, अनुसंधान भवन

सेक्टर-62, नोएडा , उत्तर प्रदेश